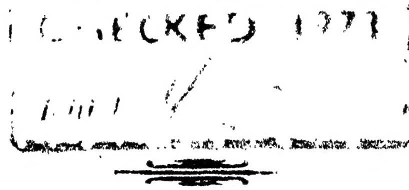
॥ ओ३म् ॥

सत्यार्थ प्रकाश चतुर्दश समुल्लास में उद्धृत

कुर्ग्रान् की आयतों का देवनागरी में उलथा और अनुवाद



लेखकः—

तार्किक शिरोमणि श्री पं० रामचन्द्र जी, देहलवी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली द्वारा प्रकाशित

प्रथमवार ३००० प्रति] नवम्बर १९४३ [मूल्य ।।)

भूमिका

मुसलमान महाशयों की ओर से बहुधा यह कहा जाता है कि सत्यार्थप्रकाश के १४ वें समुल्लास में क़ुर्आन् की कई आयतों का अनुवाद यथार्थ व युक्त नहीं है। आयतों की संख्या भी बहुत स्थानों पर भ्रान्त है।

मैंने इस बात की सत्यता को परखने के लिए १४ वें समुल्लास का बहुत ध्यान से निरीक्षण किया परन्तु सिवाय कुछ आयतों की संख्या संबंधी भूलों के अर्थ संबंधी ऐसी कोई भूल नहीं पाई जिससे समीक्षा में कुछ अनुचित या इस्लामी सिद्धान्तों के विरुद्ध आक्षेप होगया हो। समीक्षा अद्भुततया सत्य व अपरिहार्य है।

इस समुल्लास में दी हुई आयतों का आर्य्य भाषानुवाद शाह रफ़ीउद्दीन साहब देहलवी के उर्दू तर्जुमें से किया हुआ प्रतीत होता है जो बेमुहावरा होने से आर्य्य भाषा की प्रचलित पद्धति की दृष्टि से असंबद्ध अथवा बेजोड़ है। विरामों के न होने से भाषा कई स्थानों पर अनर्थक सी प्रतीत होती है। इस लिए आ० भाषा में अनुवाद करनेवाले ने अर्थ की संभवता व सार्थकता को दृष्टि में रखते हुए विरामों की कल्पना करली है। जहां २ इस कल्पना से कुछ भेद हुआ है उसका निराकरण नीचे कर दिया गया है।

उर्दू भाषा के लिखने व पढ़ने में यह दोष रहा है कि छोटी "ی" और बड़ी "ے" को बिना विवेक एक दूसरे के स्थान में लिख दिया जाता है इससे अर्बी न जानने वाले को उस भाषाके उर्दू तर्जुमे में लिङ्ग की पहचान में भ्रम उत्पन्न हो जाता है।

सबसे बड़ी बात इस संभावना का ध्यान में रखना है कि एक भाषा को दूसरी का और दूसरी को तीसरी का वेष धारण कराने में अनुवादकसे सहसा भूल हो सकती है, जिसको उस सबसे पहली भाषा के विद्वान तो केवल सुन कर जान सकते हैं परंतु अविद्वान नहीं जान सकते। इस लिए जिन महाशयों को एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद करने, किताबों के लिखने, लिखाने और छपवाने का काम पड़ता रहता है वह १४ वें समुल्लास के उद्धरणों के मार्ग में आने वाली स्पष्ट कठिनाइयों को जानते हुए भी यदि उनकी सत्यता की प्रशंसा करने के स्थान में निंदा करें तो यह उनका पक्षपात होगा।

श्री स्वामी जी महाराज ने समीक्षा के योग्य क़ुर्आनी आयतों को १५९ खण्डों में विभक्त किया है। जिस २ खण्ड में कुछ शंका होती है या हुई है उसका नीचे निराकरण करता हूं:—

खण्ड सं० ८ की अंतिम आयत के अनुवाद में अर्बी भाषा की दृष्टि से एक भूल हो गई है। सत्यार्थ प्र० का भाषानुवाद इस प्रकार है:—

"तो उस आग से डरो कि जिसका इंधन मनुष्य है और काफ़िरों के वास्ते पत्थर तय्यार किए गए हैं।"

शाह रफ़ीउद्दीन का उर्दू अनुवाद यह है:—

"पस डरो उस आग से जो इंधन उसका आदमी हैं और पत्थर तय्यार की गई है वास्ते काफ़िरों के।"

क़ुर्आन् की आयत के अनुसार शाह साहब के तर्जुमें का यह मतलब है:—

"पस उस आग से डरो जिसका इंधन मनुष्य और पत्थर हैं, और जो (आग) काफ़िरों के लिए तय्यार की गई है।"

वास्तव में इस भूल का कारण शाह साहब के अनुवाद का प्रकार ही है। अकस्मात् शाह साहब ने "हैं" क्रिया को "आदमी" के पीछे लिख दिया और "पत्थर" के पीछे विराम(Comma) नहीं दिया। आर्य्य भाषा में अनुवाद करने वाले ने सामान्य बुद्धि का प्रयोग करके "हैं" के पीछे विराम समझ लिया और "पत्थर" को आगे वाले टुकड़े से जोड़ दिया और "गई" को "गए" पढ़ लिया। इस प्रकार अनर्थक से वाक्य को सार्थक बना दिया।

यहां क़ुर्आन् के कर्त्ता का मतलब "मनुष्य" से मूर्त्तिपूजक और "पत्थर" से मूर्त्तियां 'है'। मूर्त्तिपूजक चेतन होने से आग में डाले जासकते हैं और इंधन की नाईं जलसकते हैं परंतु पत्थर की मूर्त्तियां जड़ होने से आग का इंधन नहीं हो सकतीं और न उनको कोई दुःख हो सकता है। इस लिए आ० भाषानुवादक ने संभवार्थ के आधार पर विराम की कल्पना की—"है" के पश्चात् विराम लगाया और "पत्थर" को आगे वाले वाक्य से जोड़ दिया और बेमुहावरा उर्दू तर्जुमे को बामुहावरा आ० भाषा में लिख दिया जैसाकि १४ वें समुल्लास में इस समय छपा हुआ है और जो ऊपर उद्धृत किया जा चुका है। इस में श्री स्वामी जी की भूल तो क्या अनुवादक की भूल भी नहीं कह सकते जिसने अर्बी न जानने की अवस्था में, बिना किसी अशुद्ध भावना के, केवल बुद्धि के आधार पर शाह साहब के अनुवाद को सार्थक बना कर आ० भाषा का रूप दे दिया।

खण्ड सं० ६ में "ख़ालिदून्" शब्द के अर्थ में लिङ्ग का भेद हुआ है। इसका अर्थ "सदैव रहने वाले" हैं और "सदैव रहने वाली" नहीं है यह शब्द पुल्लिङ्ग है। इस भूल का कारण भी शाह साहब का तर्जुमा ही है जो इस प्रकार है:—

"वास्ते उनके बीच उनके बीबियां हैं पाक की हुई—और बीच उनके हमेशा रहने वाले"

अर्बी न जानने वाला यदि उपर्युक्त वाक्य का आ० भाषानुवाद करे तो वह अर्थ की सार्थकता "वाली" में समझेगा, "वाले" में नहीं. क्यों कि उर्दू भाषा में "ये" तहतानी (छोटी) व फ़ौकानी (बड़ी) को एक दूसरे के स्थान पर लिख, पढ़ देने का आम रिवाज है।

खण्ड सं० ७५—इस आयत का तर्जुमा शाह साहब ने यह किया है: —

"दोस्त रखते हैं बहुत अहले किताब में से काश कि फेर देवें तुमको पीछे ईमान तुम्हारे के काफ़िर हसद से"

उपर्युक्त तर्जुमे का मतलब कुछ भी समझ में नहीं आता। कोई अर्बी जानने वाला भी जब तक क़ुर्आन् की मूल आयत को न देखे तब तक सत्यार्थ जान ही नहीं सकता आ० भाषानुवादक ने तो इसको कुछ मतलब वाली भी बना दिया है

आयत के जिस टुकड़े का अर्थ सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षा के लिए उद्धृत नहीं किया गया है उसको मैंने जहां २ आवश्यक समझा कोष्ठक में दे दिया है ताकि आयत अधूरी न रहे। सत्यार्थ प्रकाश में समीक्षित आयतों का भाषानुवाद, कहीं २ सिवाय एक दो अक्षरों के हेर फेर के, जैसा का तैसा ही रहने दिया है ताकि शाह रफ़ीउद्दीन साहब देहलवी के उर्दू तर्जुमे की झलक इसमें मौजूद रहे जिसके आधार पर भाषानुवाद किया गया है।

कुर्आन की आयतों को सही याद करने या पढ़ने के लिए इस बात का ध्यान रखें कि सस्वर और हल् याथातथ्य ही पढ़ें नहीं तो स्वाद बिगड़ जायगा।

जहाँ २ ऐसा 'ा" दो मात्राएं हों उन अक्षरों को दीर्घ से कुछ लंबा पढ़ें। अर्बी भाषा में कुछ कुकाक्षर ऐसे हैं जो कण्ठ की गहराई से उच्चारण किए जाते हैं, जिनके लिए हिंदी के टाइप में नीचे बिंदी लगाने की व्यवस्था है परंतु जब वे अक्षर (मजज़ूम) हल् भी होते हैं तो इसके लिए हिंदी के टाइप में बिंदी और हल् दोनों के एक साथ लगा देने की व्यवस्था नहीं है इसलिए यह कमी रह गई है। बहुत स्थानों पर विसर्ग से काम चलाया गया है।

यदि दूसरी आवृत्ति के निकालने की आवश्यकता पड़ी तो जो कमी इस बार रह गई है उसको उसमें दूर करने का प्रयत्न किया जायगा।

परंतु शाह साहब के तर्जुमे का तो सिर पैर ही दिखाई नहीं देता। सत्यार्थ प्रकाश में दिए हुए भाषानुवाद को ही मैं ज़रा विस्तार से लिखता हूं जिससे सत्यार्थ सुगमता से समझ में आ जावेगा।

ऐसा न हो कि काफ़िर लोग जिनके, ईमान वालों में से (अर्थात् यहूद व नसारा में से) बहुत से दोस्त हैं, ईर्ष्या करके तुमको ईमान से फेर देवें इस आयत में आए हुए "वद्द" शब्द का अर्थ शाह रफ़ीउद्दीन ने "दोस्त रखते हैं" किया है और अन्यों ने "चाहते हैं" किया है। इस शब्द के दोनों अर्थ हैं

खण्ड सं० ४० में "ईमान न लाया" के स्थान में "ईमान लाया" चाहिये खण्ड सं० ४१ में 'चाहे" दृष्टि दोष से मिल गया है। जो "उसकी कुर्सी" वाले वाक्य से पहले आए हुए वाक्य का अंतिम शब्द है। खण्ड सं० १११ में यह वाक्य "और शिक्षा दी हमने उस औरत को" मूल आयत में नहीं है। शाह साहब ने अर्थ को स्पष्ट करने के लिए अपनी ओर से इस तरह बढ़ा दिया है "और हिदायत दी उस औरत को"

इन ६ स्थलों के अतिरिक्त ऐसा कोई और स्थल दिखाई नहीं दिया जिस पर कुछ लिखने की आवश्यकता हो।

स्वामी जी की समीक्षा इतनी सामान्य है कि उसमें उपर्युक्त बातों से कोई दोष नहीं आता है। समीक्षा पर इन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है और वह जैसी की तैसी ही रहती है।

छापे की भूलों को छोड़ दिया गया है क्योंकि प्रत्येक आवृत्ति में वे बदल जाती हैं। पाठक स्वयं उनको सही कर लेंगे।

ता० २८-१०-४३
शुक्रवार (दीपावली)

रामचन्द्र देहलवी

उलाइक अ़ला हुदम्मिर्रब्बिहिम् व उलाइक हुमुल् मुफ़्लिहून् । (सू० २ । आ० ४)

इन्नल्लज़ीन कफ़रू सवाउन् अ़लैहिम् अअन्ज़र्तहुम् अम्लम् तुंज़िर्हुम् लायोमिनून् । (सू० २ । आ० ६)

ख़तमल्लाहु अ़लाक़ुलूबिहिम् व अ़ला समूएहिम् व अ़ला अब्स़ारिहिम् ग़िशावतुन् व लहुम् अज़ाबुन्अ़ज़ीम् (सू० २ आ० ७)

(६) फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुन् फ़ज़ादहु मुल्लाहु मरज़्वा । (सू० २ । आ० ६)

(७ अल्लज़ी जअ़ल-लकुमुल् अर्ज़ा फ़िरा शौंवस्समाअ बिनाअन् । (सू०२ । आ० २२)

(८) इन्कुंतुम् फ़ी रैबिम् मिम्मा नज़्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना फ़ातू बिसूरतिम् मिम्मिस्लिही वदूऊ शुहदाअकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन्कुंतुम् स्वादिक़ीन् । (सू० २ । आ० २३)

फ़ इल्लम् तफ़्अ़लू वलन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती वक़ूदुहन्नासु वल् हिजारा ओइद्दत् लिल् काफ़िरीन् । (सू० २ । आ० २४)

(९) व बश्शिरिल्लज़ीन आमनू व अ़मिलुस्स्वालिहाति अन्न लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तहःतिहल् अन्हार, कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् समरतिरिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक्ना मिन् क़ब्लु व उतूबिही मुतशाबिहा व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम्मुत्वःहरतुम् व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून् । (सू० २ । आ० २५)

यह लोग अपने मालिक की शिक्षा पर हैं और ये ही छुटकारा पाने वाले हैं।

निश्चय जो काफ़िर हुए उन पर तेरा डराना या न डराना समान है वे ईमान न लावेंगे।

अल्लाह ने उनके दिलों (व) कानों पर मुहर करदी और उनकी आँखों पर पर्दा है और उनके वास्ते बड़ा अज़ाब है।

उनके दिलों में रोग है अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया।

जिसने तुम्हारे वास्ते पृथ्वी बिछौना और आसमान की छत को बनाया।

जो तुम उस वस्तु से संदेह में हो जो हमने अपने पैग़म्बर के ऊपर उतारी तो इसके सी एक सूरत ले आओ और अपने साक्षी लोगों को पुकारो अल्लाह के बिना जो तुम सच्चे हो।

जो तुम न करो और कभी न करोगे तो उस आग से डरो कि जिसका इन्धन मनुष्य और पत्थर है, (जो) काफ़िरों के लिए तय्यार की गई है।

और आनन्द का सन्देसा दे उन लोगों को कि ईमान लाए और काम किए अच्छे, यह कि उनके वास्ते बहिश्तें हैं जिनके नीचे से चलती हैं नहरें, जब उसमें से मेवों के भोजन दिये जावेंगे तब कहेंगे कि वह वो वस्तु हैं जो हम पहले इससे दिये गये थे और उनके लिए पवित्र बीबीयां हैं, और वे सदैव वहां रहने वाले हैं।

(१०) व अल्लम आदमल्अस्माअ कुल्लहा सुम्म अरज़्ज़हुम् अलल् मलाइकति फ़क़ाल अम्बिऊनी बिअस्माइ हाउलाइ इन्कुंतुम् स्वादिक़ीन् । (सू २ । आ० ३१)

आदम को सारे नाम सिखाए फिर फ़रिश्तों के सामने करके कहा जो तुम सच्चे हो मुझे उनके काम बताओ।

काल याा आदमु अम्बिहुम् बिअस्माए हिम् फ़लम्मा अम्बाहुम बिअस्माए हिम् क़ाल अलम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ्लमुग़ैबस्समावाति वल् अर्ज़ि व अअ्लमु मा तुब्दून व मा कुंतुम् तक्तुमून् । (सू० २ । आ० ३३)

कहा हे आदम ! उनको उनके नाम बतादे तब उसने बता दिए तो ख़ुदा ने फ़रिश्तों से कहा कि क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि निश्चय मैं पृथिवी व आसमान की छिपी वस्तुओं को और प्रगट छिपे कर्मों को जानता हूँ।

(११) इज़् .क़ुल्ना लिल् मलाइकतिस्जुदू लिआदम फ़सजदू इल्ला इब्लीस अबा वस्तक्बर व कान मिनल् काफ़िरीन् । (सू० २ । आ० ३४)

जब हमने फरिश्तों से कहा कि बाबा आदम को दण्डवत् करो देखा सभोंने दण्डवत् किया परन्तु शैतान ने न माना और अभिमान किया क्योंकि वह भी एक काफ़िर था।

(१२) व .क़ुल्ना या आदमुस्कुन् अन्त व ज़ौजुकल्जन्नत व कुला मिन्हा रग़दन् है शेतुमा वला तक़्रबा हाज़िहिश्शरत फ़तकूना मिनज़्ज़ालिमीन् । (सू० २ । आ० ३५)

हमने कहा कि ऐ आदम तू और तेरी जोरू बहिश्त में रहकर आनन्द से जहां चाहो खाओ परन्तु मत समीप जाओ उस वृक्ष के कि पापी हो जाओगे।

फ़ अज़ल्लहुमश्शैत्वानु अन्हा फ़ अख़्रजहुमा मिम्मा काना फ़ीहि व क़ुल्नःबित्वू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अदूवुन्, वलकुम् फ़िल् अर्ज़े मुस्तक़रु न् वमताउन् इला.हीन् । (सू० २ । आ० ३६)

शैतान ने उनको डिगाया और उनको बहिश्त के आनन्द से खो दिया तब हमने कहा उतरो तुम्हारे में कोई परस्पर शत्रु है, तुम्हारा ठिकाना पृथिवी है और एक समय तक लाभ है।

फ़तलक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ताब अलैहि । (सू० २ । आ० ३७)

आदम अपने मालिक की कुछ बातें सीख कर पृथिवी पर आ गया।

(१३) वत्तक़ू यौमल् ता तज्ज़ी नफ़्सुन् अन् नफ़्सिन् शैअन् वला युक़्बलु मिन्हा शफ़ाअतुन् वला योख़ज़ु मिन्हाअ़दूलुन् वला हुम् युन्सरून् ।। (सू० २ । आ० ४८)

उस दिन से डरो कि जब कोई जीव किसी जीव से भरोसा न रखेगा न उसकी शिफ़ारिश स्वीकार की जावेगी न उससे बदला लिया जावेगा और न वे सहाय पावेंगे।

(१४) वइज़् आतैना मूसल्किताब वल् फ़ुर्क़ान। (सू० २। आ० ५३)

(और जब) हमने मूसा को किताब और मोजिज़े (करामाती) दिये।

फ़क़ुल्ना लहुम् कूनू क़िरदतन् खासिईन्,

हमने उनको कहा कि तुम निन्दित बंदर हो जावो।

फ़जअल्नाहा नकालल्लिमा बैनयदैहा वमा खल्फ़हा व मौएज़्ज़तल्लिल् मुत्तक़ीन्। (सू० २। आ० ६५, ६६)

यह एक भय दिया जो उनके सामने और पीछे थे उनको, और शिक्षा ईमानदारों को।

(१५) कज़ालिक युह्यिल्लाहुल् मौता व युरीकुम् आयातिही ल अल्लकुम् तअ्क़िलून्। (सू० २। आ० ७३)

इस तरह खुदा मुर्दों को जिलाता है और तुमको अपनी निशानियाँ दिखलाता है कि तुम समझो।

(१६) उलाइका अस्हाबुल् जन्नति, हुम् फ़ीहा खालिदून् ।(सू० २। आ० ८२)

वे सदैव काल बहिश्त अर्थात् बैकुण्ठ में वास करने वाले हैं।

(१७) व इज़् अखज़्ना मीसाक़कुम् ला तस्फ़िकून दिमाअकुम् व ला तुख्रिजून अन्फ़ुसकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्म अक़्रर्तुम् व अन्तुम् तश्हदून्।

जब हमने तुमसे प्रतिज्ञा कराई न बहाना लोहू अपने आपस में और किसी को अपने आपस के घरों से न निकालना फिर प्रतिज्ञा की तुमने, इसके तुम ही साक्षी हो।

सुम्मअन्तुम् हाउलाइ तक़्तुलून अन्फ़ुस कुम् व तुख्रिजून फ़रीक़म् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम्। (सू० २। आ० ८४, ८५)

फिर तुम वे लोग हो कि अपने आपस को मार डालते हो एक फ़िरके को आप में से घरों उनके से निकाल देते हो।

(१८) उलाइकल्लज़ी नश्तर वुल् हयात दुनिया बिल् आखिरति, फला युखफ़्फ़फ़ु अन्हुमुल् अज़ाबु वलाहुम् युन्सरून्। (सू० २। आ० ८६)

ये वे लोग हैं कि जिन्होंने आखरत के बदले जिन्दगी यहाँ की मोल ले ली उनसे पाप कभी हलका न किया जावेगा और न उनको सहायता दी जावेगी।

(१९) लक़द आतैना मूसल् किताब व क़फ़्फ़ैना मिम्बादिही बिर्रुसुल्, व आतैना ईसब्न मर्यमल्बैयिनाति व ऐयदुनाहु बिरूहिल् क़ुदुसि, अफ़कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्तकबर्तुम्, फ़फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून्। (सू० २। आ० ८७)

निश्चय हमने मूसा को किताब दी और उसके पीछे हम पैग़म्बर को लाये और मरियम के पुत्र ईसा को प्रकट मौजिज़े अर्थात् दैवीशक्ति और सामर्थ्य दिये उसके साथ रूहुलकुद्दुस के, जब तुम्हारे पास उस वस्तु सहित पैग़म्बर आया कि जिसको तुम्हारा जी चाहता नहीं फिर तुमने अभिमान किया एक मत को झुठलाया और एक को मार डालते हो।

(२०) व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहून अलल् लज़ीन कफ़रू, फ़लम्मा जा अहुम् मा अ़रफ़ू कफ़रू बिही, फ़ लअ़्नतुल्लाहि अ़लल् काफ़िरीन् ।
(सू० २ । आ० ८८)

और इससे पहले काफ़िरों पर विजय चाहते थे, जो कुछ पहिचाना था जब उनके पास वह आया झट काफ़िर हो गये, काफ़िरों पर लानत है अल्लाह की ।

(२१) बुश्रा लिल् मोमिनीन् ।

आनन्द का संदेशा ईमानदारों को ।

मन् काना अ़दूवुल्लिल्लाहि व मलाइकतिही व रुसुलिही व जिब्रील व मीकाल फ़ इन्नल्लाह अ़दूवुल् लिल् काफ़िरीन् ।
(सू० २ । आ० ९७, ९८)

✓ अल्लाह, फ़रिश्तों, पैग़म्बरों, जिबरईल और मीकाइल का जो शत्रु है अल्लाह भी ऐसे काफ़िरों का शत्रु है ।

(२२) वक़ूलू हित्ततुन् नग़्फ़िलकुम् ख़तायाकुम् व सनज़ीदुल् मुहसिनीन् ।
(सू० २ । आ० ५८)

और कहो कि क्षमा माँगते हैं हम क्षमा करेंगे तुम्हारे पाप और भलाई करने वालों के ।

(२३) व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़ क़ुल्नज़्रिब् बिअ़साकल् हजर, फ़न् फ़जरत् मिन् हुस्नता अ़श्रता ऐना ।
(सू० २ । आ० ६०)

जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिये पानी माँगा हमने कहा कि अपना असा (दंड) पत्थर पर मार उसमें से बारह चश्में बह निकले ।

(२४) वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मति ही मं यशाउ । (सू० २ । आ० १०५)

और अल्लाह खास करता है जिसको चाहता है साथ दया अपनी के ।

(२५) वद्दकसीरुम्मिन् अह्लिल् किताबि लौ यरुद्दूनकुम् मिम् बादि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् हसदन् ।
(सू० २ । आ० १०९)

ऐसा न हो कि काफ़िर लोग ईर्ष्या करके तुमको ईमान से फेर देवें क्योंकि उनके ईमान वालों में से बहुत से दोस्त हैं ।

(२६) फ़ ऐनमा तुवल्लू फ़सम्म वज्हुल्लाहि ।
(सू० २ । आ० ११५)

तुम जिधर अपना मुंह करो उधर ही मुंह अल्लाह का है ।

(२७) बदीउस्समावाति वल् अ़र्ज़, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़ इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़यकून् । (सू० २ । आ० ११७)

जो आसमान और भूमि का उत्पन्न करनेवाला है जब वो कुछ करना चाहता है (यह नहीं कि उसको करना पड़ता है) किन्तु उसे कहता है कि होजा बस हो जाता है ।

(२८) इज़् जअ़ल्नल् बैत मसाबतन् लिन्नासि व अम्नन्, वत्तख़िज़ू मिम् मक़ामि इब्राहीम मुसल्लन् ।(सू० २ । आ० १२५)

जब हमने लोगों के लिये काबे को पवित्र स्थान सुख देने वाला बनाया तुम नमाज़ के लिये इबराहीम के स्थान को पकड़ो ।

(२६) मैंयर्ग़बु अ़न् मिल्लति इब्राहीम इल्ला मन् सफ़िह नफ़्सहू, व लक़दिस्त्वफ़ैनाहु फ़िद् दुनिया, व इन्नहू फ़िल् आख़िरति लमिनस्स्वालिहीन्।
(सू० २। आ० १३०)

यह कौन मनुष्य हैं जो इबराहीम के दीन से फिर जावें परन्तु जिसने अपनी जान को मूर्ख बनाया और निश्चय हमने दुनियां में उसी को पसन्द किया और निश्चय आख़रत में वो ही नेक है।

(३०) क़द् नरा तक़ल्लुब वज्हिक फ़िस्समाए फ़ला नुवल्लियन्नक क़िब्लतन् तर्ज़ाहा फ़ वल्लि वज्हक शत्वरल् मस्जिदिल् हरा-मि व हैसु माकुंतुम् फ़ वल्लू वुजूहकुम् शत्वरहू।
(सू० २। आ० १४४)

निश्चय हम तेरे मुख को आसमान में फिरता देखते हैं अवश्य हम तुझे उस क़िबले को फेरेंगे कि पसन्द करे उसको, बस अपना मुख मस्जिदुल्हराम की ओर फेर, जहां कहीं तुम हो, अपना मुख उसकी ओर फेर लो।

(३१) वला तक़ूलू लिमैं युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन् बल् अ़ह्याउन्।
(सू० २। आ० १५४)

जो लोग अल्लाह के मार्ग में मारे जाते हैं उनके लिये यह मत कहो कि ये मृतक हैं किन्तु वे जीवित हैं।

(३२) इन्नल्लाह शदीदुल् अ़ज़ाब।

और यह कि अल्लाह कठोर दुःख देनेवाला है।

वला तत्तबिऊ ख़ुत्वुवातिश्शैतानि, इन्नहूलकुम् अ़दूवुम्मुबीन्।

शयतान के पीछे मत चलो निश्चय वो तुम्हारा प्रत्यक्ष शत्रु है।

इन्नमा यामुरुकुम् बिस्सूइ वल् फ़ःशा-इ व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि माला तअ़्लमून्।
(सू० २। आ० १६५, १६८, १६६)

उसके बिना और कुछ नहीं कि बुराई और निर्लज्जता की आज्ञा दे और यह कि तुम कहो अल्लाह पर जो नहीं जानते।

(३३) इन्नमा हर्रम अ़लैकुमुल् मैतत वद्दम व लह़्मल् ख़िंज़ीर, व मा उहिल्लबिही लि ग़ैरिल्लाहि। (सू० २। आ० १७३)

तुम पर मुर्दार, लोहू और गोश्त सूअर का हराम है और अल्लाह के बिना जिस पर कुछ पुकारा जावे।

(३४) उ़हिल्ल लकुम् लैलतस्स्विया मिर्रफ़सु इला निसाइकुम, हुन्न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्लहुन्न, अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुंतुम् तख़्तानून अन्फ़ुसकुम् फ़ताब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अन्कुम् फ़ल् आन बाशिरूहुन्ना वब्तग़ू मा कतबल्लाहु लकुम्, वकुलू वश्रबू हत्ता यतबैयन लकुमुल् ख़ैत्वुल् अब्यज़ु मिनल् ख़ैत्विल् अस्वदि मिनल् फ़जर्।
(सू० २। आ० १८७)

रोज़े की रात तुम्हारे लिये हलाल की गई कि मदनोत्सव करना अपनी बीबियों से, वे तुम्हारे वास्ते पर्दा हैं और तुम उनके लिये पर्दा हो, अल्लाह ने जाना कि तुम चोरी करते हो अर्थात् व्यभिचार बस फिर अल्लाह ने क्षमा किया तुमको बस उनसे मिलो और ढूंढो जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये लिख दिया है अर्थात्, संतान, खाओ पीओ यहाँ तक कि प्रगट हो तुम्हारे लिये काले तागे से सुपेद तागा वा रात से जब दिन निकले।

(३५) व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ीन युक़ातिलूनकुम्; — अल्लाह के मार्ग में लड़ो उनसे जो तुमसे लड़ते हैं।

वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम्, अल् फ़ित्नतु अशद्दु मिनल् क़त्ल; — मार डालो तुम उनको जहाँ पाओ। क़तल से कुफ़्र बुरा है।

व क़ातिलूहुम् हत्ता लातकून फ़ित्नतुन् व यकूनद्दीनु लिल्लाहि; — यहाँ तक उनसे लड़ो कि कुफ़्र न रहे और होवे दीन अल्लाह का।

फ़मनिअ़तदा अलैकुम् फ़अ़्तदू अलैहि बिमिस्लि मअ़तदा अलैकुम्। — उन्होंने जितनी ज़ियादती करी तुम पर उतनी ही तुम उनके साथ करो।

(सू० २। आ० १९०, १९१, १९३, १९४)

(३६) वल्लाहु लायुहिब्बुल् फ़साद्। — अल्लाह झगड़े को मित्र नहीं रखता।

(सू० २ आ० २०५)

या ऐ युहल्लज़ीन आमनुद्ख़ुलू फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तन्। (सू० २। आ० २०८) — ऐ लोगो जो ईमान लाये हो इसलाम में प्रवेश करो (पूरे पूरे)

(३७) वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मैंयशाउ बिग़ैरि हिसाब — ख़ुदा जिसको चाहे अनन्त रिज़्क़ देवे।

(सू० २। आ० २१२)

(३८) यस्अलूनक अनिल् महीज़ि क़ुल् हुव अज़न् फ़अ़्तज़िलुन्निसाअ फ़िल् महीज़ि, वला तक़्रबू हुन्न हत्ता यत्तहुर्न फ़ इज़ा तत्तःहर्न फ़ातू हुन्न मिन् हैसु अमर कुमुल्लाहु। — प्रश्न करते हैं तुझसे रजस्वला को, कह वो अपवित्र हैं पृथक रहो ऋतु समय में उनके समीप मत जाओ जब तक कि वे पवित्र न हों, जब नहा लेवें उनके पास उस स्थान से जाओ ख़ुदा ने आज्ञा दी।

निसाउकुम् हर्सुल्लकुम् फ़ातू हर्सकुम् अन्नाशेतुम्। — तुम्हारी बीवियाँ तुम्हारे लिये खेतियाँ हैं बस जाओ जिस तरह चाहो अपने खेत में।

ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम्। (सू० २। आ० २२२, २२३, २२५) — तुमको अल्लाह लग़्व (बेकार, व्यर्थ) शपथ में नहीं पकड़ता।

(३९) मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्लाह क़र्ज़न् हसनन् फ़ युज़्वाइफ़हू लहू अज़्‌आफ़न् कसीरा। (सू० २। आ० २४५) — वो कौन मनुष्य है जो अल्लाह को उधार देवे अच्छा बस अल्लाह द्विगुण करे उसको उसके वास्ते।

(४०) फ़ मिन्हुम् मन् आमन व मिन् हुम् मन कफ़र, व लौशा अल्लाहु मक़्ततलू व लाकिन्नल्लाह यफ़्अलु मा युरीद। (सू० २। आ० २५३)

उनमें से कोई ईमान लाया और कोई काफ़िर हुआ जो अल्लाह चाहता न लड़ते, जो चाहता है अल्लाह करता है।

(४१) लहू माफ़िस्समावाति वमा फ़िल् अर्ज़ि वसिआ कुर्सीयुहु स्समावाति वल् अर्ज़ं। (सू० २। आ० २५५)

जो कुछ आसमान और पृथवी पर है सब उसी के लिये है। उसकी कुरसी ने आसमान और पृथवी को समा लिया है।

(४२) इन्नल्लाह याती बिश्शम्सि मिनल् मश्रिक़ि फ़ाति बिहा मिनल् मग्रिबि फ़ बुहितल्लज़ी कफ़रा, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन्। (सू० २। २५८)

अल्लाह सूर्य को पूर्व से लाता है बस तू पश्चिम से ले आ बस जो काफ़िर हैरान हुआ था निश्चय अल्लाह पापियों को मार्ग नहीं दिखलाता।

[४३] क़ाल फ़ख़ुज़् अर्बअतम् मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्न इलैक, सुम्मजअल् अला कुल्लि जबलिम् मिन्हुन्न जुज़्अन् सुम्मदूउ हुन्न यातीनक सअयन्। (सू० २ आ० २६०)

कहा चार जानवरों से ले उनकी सूरत पहिचान रख, फिर हर पहाड़ पर उनमें से एक २ टुकड़ा रख दे फिर उनको बुला दौड़ते तेरे पास चले आवेंगे।

[४४] योतिल् हिक्मत मैं यशा। (सू० २। आ० २६६)

जिसको चाहे नीति देता है।

[४५] फ़ यग्फ़िरु लि मैं यशाउ व युअज़्ज़िबु मैं यशाउ, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन क़दीर। (सू० २ आ० २८४)

वह कि जिसको चाहेगा क्षमा करेगा जिसको चाहेगा दण्ड देगा क्योंकि वह सब वस्तु पर बलवान है।

[४६] क़ुल् अउनब्बिउकुम् बिख़ैरिम् मिन ज़ालिकुम्, लिल्लज़ी नत्तक़ौ इन्द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन तह्तिहल् अन्हारु ख़ालिदीन फ़ीहा व अज़्वाजुम् मुत्तहरतुम् व रिज़्वानुम्मिनल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिल् इबाद। (सू० ३। आ० १४)

कह इससे अच्छी और क्या परहेज़गारों को ख़बर दूं कि अल्लाह की ओर से बहिश्तें हैं जिनमें नहरें चलती हैं उन्हीं में सदैव रहने वाली शुद्ध बीबियां हैं अल्लाह की प्रसन्नता से, अल्लाह उनको देखने वाला है साथ बन्दों के।

(४७) इन्नद्दीन इन्दल्लाहिल् इस्लाम्

(सू० ३ । आ० १८)

निश्चय अल्लाह की ओर से दीन इस्लाम है।

(४८) वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम्मा कसबत् व हुम् ला युज़्लमून्

प्रत्येक जीव को पूरा दिया जावेगा जो कुछ उसने कमाया और वे न अन्याय किये जावेंगे।

कुलिल्लाहुम्म मालिकल्मुल्कि तोतिल्मुल्क मन् तशाउ व तन्ज़िउल्मुल्क मिम्मन् तशाउ व तुइज़्ज़ु मन् तशाउ वतोज़िल्लु मन् तशाउ बियदिकल्खैर, इन्नक अला कुल्लि शैइन् क़दीर

कह या अल्लाह तू ही मुल्क का मालिक है जिसको चाहे देता है जिससे चाहे छीनता है जिसको चाहे प्रतिष्ठा देता है जिसको चाहे अप्रतिष्ठा देता है सब कुछ तेरे ही हाथ में है प्रत्येक वस्तु पर तू ही बलवान् है।

तूलिजुल्लैल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्न हार फ़िल्लैल, व तुख्रिजुल् हैय मिनल् मैयति व तुख्रिजुल् मैयत मिनल् .हैं, तर्ज़ुकु मन् तशाउ बिग़ैरि हिसाब

रात को दिन में और दिन को रात में पैठाता है और मृतक को जीवित से जीवित को मृतक से निकालता है और जिसको चाहे अनन्त अन्न देता है।

ला यत्तखिज़िल् मोमिनूनल् काफ़िरीन औलियाअ मिन् दूनिल् मोमिनीन, व मं यफ़्अल् ज़ालिका फलैसा मिनल्लाहि फ़ी शैइन्

(सू० ३ । आ० २४ । २५ । २६ । २७)

मुसलमानों को उचित है कि काफ़िरों को मित्र न बनावें सिवाय मुसलमानों के जो कोई यह करे बस वह अल्लाह की ओर से नहीं।

कुल् इंकुंतुम् तुहिब्बूनल्लाह फ़त्तबिऊनी युहबिब्कुमुल्लाहु व यग़्फ़िर्लकुम् ज़ुनूबकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम्

(सू० ३ । आ० ३०)

कह जो तुम चाहते हो अल्लाह को, तो पक्ष करो मेरा, अल्लाह चाहेगा तुम को, और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा। निश्चय करुणामय है।

(४९) इज़् क़ालतिल् मलाइकतु या मर्यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व त्हःहरकि वस्तफ़ाकि अला निसाइल् आलमीन्

(सू० ३ । आ० ४१)

जिस समय कहा फ़रिश्तों ने कि ऐ मर्य्यम तुझको अल्लाह ने पसन्द किया और पवित्र किया ऊपर जगत् की स्त्रियों के।

(५०) (फ इन्नमा) यक़ूलु लहू कुन् फ़यकून्

(आ० ४६)

उसको कहता है कि हो बस हो जाता है।

मकरू व मकरल्लाहु, वल्लाहु खैरुल् माकिरीन् (सू० ३ । आ० ५३)

काफ़िरों ने धोखा दिया ईश्वर ने धोखा दिया, ईश्वर बहुत मकर करने वाला है।

(५१) अलैंयक्फ़ियकुम् ऐंयुमिद्दकुम् रब्बुकुम् बिसलासति आलाफ़िम् मिनल् मलाइकति मुँज़लीन् (सू० ३। आ०१२३)

क्या तुमको यह बहुत न होगा कि अल्लाह तुमको तीन हज़ार फ़रिश्तों के साथ सहाय देवे।

(५२) वन्सुर्ना अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन् (सू० ३। आ० १४६)

और काफ़िरों पर हमको सहाय कर।

बलिल्लाहु मौलाकुम्, व हुव ख़ैरुन्ना सिरीन् (सू० ३। आ० १४६)

अल्लाह तुम्हारा उत्तम सहायक और कारसाज़ है।

वलइन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औमुत्तुम् लिमग़्फ़िरतुम् मिनल्लाहि व रह़्मतुन् ख़ैरुन् (मिम्मा यज्मऊन्) (सू० ३। आ० १५६)

जो तुम अल्लाह के मार्ग में मारे जाओ या मर जाओ अल्लाह की दया बहुत अच्छी है।

(५३) व मा कानल्लाहु लियुत्वलिअ़कुम् अ़लल् ग़ैबि वलाकिन्नल्लाह यज्तबी मिर्रुसुलिही मैं यशाउ, फ़ आमिनू बिल्ला हि व रुसुलिही (सू० ३। आ० १७८)

और अल्लाह तुमको परोक्षज्ञ नहीं करता परन्तु अपने पैग़म्बरों से जिसको चाहे पसन्द करे बस अल्लाह और उसके रसूल के साथ ईमान लाओ।

(५४) या ऐ युहल्लज़ीन आमनुस्त्वबिरू व स्वाबिरू व राबित्वू, वत्तक़ुल्लाह ल अ़ल्लकुम् तुफ़्लेहून् (सू० ३। आ० १६६)

ऐ ईमान वालों संतोष करो परस्पर थामे रखो और लड़ाई में लगे रहो अल्लाह से डरो कि तुम छुटकारा पाओ।

(५५) तिल्क हुदूदुल्लाहि वमैं युत्विइल्लाह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् नज्री मिन् ताःतिहल्अन्हारु (ख़ालिदीना फ़ीहा) व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्अ़ज़ीम्। (सू० ४। आ० १३)

ये अल्लाह की हदें हैं जो अल्लाह और उसके रसूल का कहा मानेगा वह बहिश्त में पहुंचेगा जिनमें नहरें चलती हैं और यही बड़ा प्रयोजन है।

व मैं यअ़्स्विल्लाह व रसूलहू व यत अ़द्द हुदूदहू युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालि दीना फ़ीहा, व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन् (सू० ४। आ०१४)

जो अल्लाह की और उसके रसूल की आज्ञा भंग करेगा और उसकी हदों से बाहर हो जावेगा वो सदैव रहने वाली आग में जलाया जावेगा और उसके लिये ख़राब करने वाला दुःख है।

(५६) इन्नल्लाह ला यज़्लिमु मिस्क़ाल ज़र्रतिन्, व इन् तकु हसनतैं युज़्आ इफ़्हा वयोतिमिन् लदुन्हु अज्रन् अज़ीमा
(सू० ४ । आ० ४०)

और एक त्रसरेणु के बराबर भी अल्लाह अन्याय नहीं करता और जो भलाई होवे उसका दुगुण करेगा उसको।

(५७) फ इज़ा बरज़ु मिन् इंदिका बैयता त्वाइफ़तुम् मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु, वल्लाहु यक्तुबु मा युबैयतून्
(सू० ४ । आ० ८१)

जब तेरे पास से बाहर निकलते हैं तो तेरे कहने के सिवाय (विपरीत) सोचते हैं अल्लाह उनकी सलाह को लिखता है।

अल्लाहु अर्कसहुम् बिमा कसबू, अतुरीदून अन् तःदू मन् अज़ल्लल्लाहु व मैं युज़्लिल लिल्लाहु फ़लन् तजिद लहू सबीला
(सू० ४ । आ० ८८)

अल्लाह ने उनकी कमाई वस्तु के कारण से उनको उलटा किया क्या तुम चाहते हो कि अल्लाह के गुमराह किये हुए को मार्ग पर लाओ बस जिसको अल्लाह गुमराह करे उसको कदापि मार्ग न पावेगा।

(५८) (फ इल्लम्) यकुफ़्फ़ू ऐदीहुम् फ खुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम्
(सू० ४ । आ० ९१)

और अपने हाथों को न रोकें तो उनको पकड़ लो और जहां पाओ मार डालो।

वमा कान लिमोमिनिन् ऐंयक़्तुल मोमिनन् (इल्ला ख़त्व अन्), व मन् क़तल मोमिनन् ख़त्वअन् फ तःरीरु रक़बतिम् मोमिनतिन् व दियातुम् मुसल्लमतुन् इला अःलिही इल्ला ऐंय स्सद्दक़ू,

मुसलमान को मुसलमान का मारना योग्य नहीं जो कोई अनजाने से मार डाले बस एक गर्दन मुसलमान का छोड़ना है, और खून बहा (रक्त दंड) उन लोगों की ओर सौंपी हुई जो उस क़ौम से होवें, और तुम्हारे लिये दान कर देवें;

(फ इन् कान मिन् क़ौमिन् अ़दू विल्लकुम्) (सू० ४ । आ० ९२)

(जो दुष्मन की कौम से है)

मैं यक़्तुल् मोमिनम्मुतअम्मिदन् फ जज़ाउहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व लअ़नहू।
(सू० ४ । आ० ९३)

और जो कोई मुसलमान को जान कर मार डाले वह सदैव काल दोजख में रहेगा उस पर अल्लाह का क्रोध और लानत है।

(५९) वमैं युशाक़िक़िर्रसूल मिम्बाअ्दि मा तबैयन लहुल्हुदा वयत्तबिअ् ग़ैर सबीलिल् मोमिनीन (नुवल्लिही मा तवल्ला) व नुस्लिही जहन्नम्

(सू० ४ । आ० ११५)

और शिक्षा प्रकट होने के पीछे जिसने रसूल से विरोध किया और मुसलमानों से विरुद्ध पक्ष किया अवश्य हम उसको दोज़ख़ में भेजेंगे।

(६०) मैं यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइकतिही व कुतुबिही व रुसुलिही वल् यौमिल् आखिरि फ़क़द् ज़ल्लज़्ज़लालम् बईदा।

जो अल्लाह फ़रिश्तों किताबों रसूल और कयामत के साथ कुफ्र करे निश्चय वह गुमराह है।

इन्नल्लज़ीन आमनू सुम्म कफ़रू सुम्म आमनू सुम्म कफ़रू सुम्मज़्दादू कुफ़्रन् लम्यकुनिल्लाहु लियग्फ़िर लहुम् वला लियह्दियहुम् सबीला।

(सू० ४ । आ० १३६-३७)

निश्चय जो लोग ईमान लाये फिर काफ़िर हुए फिर २ ईमान लाये पुनः फिर गये और कुफ्र में अधिक बढ़े अल्लाह उनको कभी क्षमा नहीं करेगा और न मार्ग दिखलावेगा।

(६१) इन्नल्लाह जामिउल्मुनाफ़िक़ीन वल् काफ़िरीन फ़ी जहन्नम जमीआ।

निश्चय अल्लाह बुरे लोगों और काफ़िरों को जमा करेगा दोज़ख़ में।

इन्नल् मुनाफ़िक़ीन युख़ादिऊनल्लाह व हुव ख़ादिउहुम्।

निश्चय बुरे लोग धोखा देने हैं अल्लाह को और उनको वह धोखा देता है।

या ऐयुहल्लज़ीन आमनू ला तत्तख़िज़ुल् काफ़िरीन औलियाअ मिन् दूनिल् मोमिनीन्।

(सू० ४ । आ० १४०-१४२-१४४)

ऐ ईमान वालो मुसलमानों को छोड़ काफ़िरों को मित्र मत बनाओ।

(६२) या ऐयुहन्नासु क़द् जाअकुमुर्रसूलु बिल् हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ आमिनू (ख़ैरल्लकुम्)

ऐ लोगो निश्चय तुम्हारे पास सत्य के साथ ख़ुदा की ओर से पैग़म्बर आया बस तुम उन पर ईमान लाओ।

इन्नमल्लाहु इलाहुन् वाहिदुन्।

(सू० ४ । आ० १७०-१७१)

अल्लाह माबूद अकेला है।

(६३) .हुर्रिमत् अलैकुमुल्मैततु वद्दमु व ल.ह्मुल् खिंज़ीर वमा उहिल्ल लिग़ैरिल्लााहि बिही वल्मुन्खनिक़तु वल् मौक़ू.ज़तु वल् मुतरद्दियतु वन्नत्वी.हतु वमा अकलस्सबुउ। (सू० ५। आ० ३)

तुम पर हराम कियागया मुर्दार, लोहू, सूअरका मांस, जिस पर अल्लाह के विना कुछ और पढ़ा जावे, गला घोंटे, लाठी मारे, ऊपर से गिर पड़े, सींग मारे, और दरंद का खाया हुआ।

(६४) व अक्रज़्वतुमुल्लाह क़र्ज़न् हसनन् ल उकफ़्फ़िरन्न अन्कुम् सैयिआतिकुम् वलउद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन्। (सू० ५। आ० १२)

और अल्लाह को अच्छा उधार दो अवश्य मैं तुम्हारी बुराई दूर करूँगा और तुम्हें बहिश्तों में भेजूंगा।

(६५) यग्फ़िरु लिमें यशााउ व युअ़ज़्ज़िबु में यशा

जिसको चाहता है क्षमा करता है जिसको चाहे दुःख देता है।

अताकुम् मालम् योति अ.हदम् मिनल् आालमीन्। (सू० ५। आ० १८-२०)

जो कुछ किसी को भी न दिया वह तुम्हें दिया।

(६६) अत्वीउ.ल्लाह व अत्वीउ.र्रसूल। (सू० ५। आ० ९२)

आज्ञा मानो अल्लाह की और आज्ञा मानो रसूल की।

(६७) अफ़ल्लााहु अम्मा सलफ़, वमन् आद फ यन्तक़िमुल्लााहु मिन्हु। (सू० ५। आ० ९५)

अल्लाह ने माफ किया जो हो चुका और जो कोई फिर करेगा अल्लाह उससे बदला लेगा।

(६८) वमन् अज़्लमु मिम्मनिफ़्तरा अलल्लाहि कज़िबन् औ क़ाला ऊहिय इलैय वलम् यूह. इलैहि शैउन्, व मन् क़ाल सउन्ज़िलु मिस्ल मा अन्ज़लल्लाहु। (सू० ६। आ० ९४)

और उस मनुष्य से अधिक पापी कौन है जो अल्लाह पर झूंठ बाँध लेता है और कहता है कि मेरी ओर वही की गई परन्तु वही उसकी ओर नहीं की गई और जो कहता है कि मैं भी उतारूंगा कि जैसे अल्लाह उतारता है।

(६९) लक़द् खलक़्नाकुम् सुम्म स्वौवर्नाकुम् सुम्म .क़ुल्ना लिल् मलााइकतिस्जुद् लिआदम फ़सजद् इल्ला इब्लीस, लम् यकुम्मिनस्साजिदीन।

अवश्य हमने तुम को उत्पन्न किया फिर तुम्हारी सूरतें बनाईं फिर हमने फरिश्तों से कहा कि आदम को सिजदा करो, बस उन्होंने सिजदा किया परन्तु शयतान सिजदा करने वालों में से न हुआ।

क़ाल मा मनअ़क अल्लातस्जुद इज़् अमर्तुक, क़ाल अन खैरुम्मिन्हु खलक़्तनी मिन् नारिन् व खलक़्तहू मिन्त्वीन् क़ाल फ़ाहबित्व मिन्हा फ़मा यकूनु लक अन् ततकब्बर फ़ीहा ।

कहा जब मैंने तुझे आज्ञा दी फिर किसने रोका कि तूने सिजदा न किया, कहा मैं उससे अच्छा हूं तूने मुझ को आग से और उसको मिट्टी से उत्पन्न किया।

कहा बस उसमें से उतर यह तेरे योग्य नहीं है कि तू उसमें अभिमान करे।

क़ाल अन्ज़िरनी इला यौमि युब्असून् ।

कहा उस दिन तक ढील दे कि कबरों में से उठाये जावें।

क़ाल इन्नक मिनल् मुन्ज़िरीन् ।

कहा निश्चय तू ढील दिये गयों से है।

क़ाल फ़बिमा अग्वैतनी लअक़ुउदन्न लहुम् स्विरातकल्मुस्तक़ीम् ।

कहा बस इसकी क़सम है कि तूने मुझको गुमराह किया अवश्य मैं उनके लिये तेरे सीधे मार्ग पर बैठूंगा।

वला तजिदु अक्सरहुम् शाकिरीन् ।

और प्रायः तू उनको धन्यवाद करने वाला न पावेगा

क़ाल फ़ाख़ुज मिन्हा मज़ऊमम् मद्हूरन्, लमन् तबिअ़क मिन्हुम् लअम्लअन्न जहन्नम मिन्कुम् अजमईन् ।

कहा उससे दुर्दशा के साथ निकल अवश्य जो कोई उनमें से तेरा पक्ष करेगा तुम सब से दोजख को भरूंगा।

(सू० ७ । आ० ११ । १२ । १३ । १४ । १५ १६ । १७ । १८)

(७०) इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी खलक़स्समावाति वल् अर्ज़ फ़ी सित्तति ऐयामिन् सुम्मस्तवा अलल् अर्शि ।

निश्चय तुम्हारा मालिक अल्लाह है जिसने आसमानों और पृथिवी को छः दिन में उत्पन्न किया फिर क़रार पकड़ा अर्श पर।

तद्ऊ रब्बकुम् तज़र्रुअन् ।

दीनता से अपने मालिक को पुकारो।

सू० ७ । आ० (५४ । ५५)

(७१) वला तअसौफ़िल् अर्ज़ि मुफ़्सिदीन् ।
(सू० ७ । आ० ७४)

मत फिरो पृथिवी पर झगड़ा करते।

(७२) फ अल्क़ा असाहु फ़इज़ा हिय सुअ्बानुम्मुबीन् । सू० ७ । (आ० १०७)

बस एक ही बार अपना असा डाल दिया और वह अजगर था प्रत्यक्ष।

(७३) फ़ अर्सल्ना अलैहि मुत्तूफ़ान वल् जराद वल् कुम्मल वज़्ज़फ़ादिअ़ वद्दम

बस हमने उस पर मेंह तूफान भेजा टीढ़ी, चिचड़ी और मेढ़क और लोहू।

फ़ंतक़म्ना मिन्हुम् फ़ अग्रक़्नाहुम् फ़िल् यम्मि

बस हमने उनसे बदला लिया और उनको डुबा दिया दरियाव में।

वजावज़्ना बनी इस्राईलल्ब:र

और हमने बनी इसराईल को दरियाव से पार उतार दिया।

इन्नहाउलाइ मुतब्बरुम् माहुम् फ़ीहि व बात्विलुम्माकानू यअ्मलून्
(सू० ७। आ० १३३। १३६। १३८। १३९)

निश्चय वह दीन झूंठा है कि जिसमें हैं और उनका कार्य भी झूंठा है।

(७४) फ़ सौफ़ तरानी, फ़लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल् जबलि जअलहू दक्कन् व खर्रमूसा स्वइक़ा (सू० ७। आ० १४३)

बस तू मुझको अलबत्ता देख सकेगा जब प्रकाश किया उसके मालिक ने पहाड़ की ओर उसको परमाणु २ किया गिर पड़ा मूसा बेहोश।

(७५) वज़्कुर्रब्बक फ़ीनफ़्सिक तज़र्रुअन् व खीफ़तन् वदूनल् जःरि मिनल् क़ौलि बिल् ग़ुदुवि वल् अस्वाल्
(सू० ७। आ० २०५)

और अपने मालिक को दीनता डर से मन में याद कर धीमी आवाज़ से सुबह को शाम को।

(७६) यस्अलूनक अनिल् अन्फ़ाल, क़ुलिल् अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूल, फ़त्तक़ुल्लाह
(सू० ८। आ० १)

प्रश्न करते हैं तुझ को लूटों से कह लूटें वास्ते अल्लाह के और रसूल के और डरो अल्लाह से।

(७७) व यक़्तअ दाबिरल् काफ़िरीन्
(सू० ८। आ० ७)

और काटे जड़ काफ़िरों की।

अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम्मिनल्म लाइकति मुर्दिफ़ीन् (सू० ८। आ० ९)

मैं तुमको सहाय दूंगा साथ सहस्र फरिश्तों के पीछे २ आने वाले।

स उल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीन कफ़रुर्रौब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् अअ्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्ल बनानिन् (सू० ८। आ० १२)

अवश्य में काफ़िरों के दिलों में भय डालूंगा।

बस मारो ऊपर गर्दनों, के मारो उनमें से प्रत्येक पोरी (संधि) पर।

(७८) अन्नल्लाह मअल्मोमिनीन्

अल्लाह मुसलमानों के साथ है।

या ऐ युहल्लज़ीन आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूल्

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो पुकारना स्वीकार कर वास्ते अल्लाह के और वास्ते रसूल के।

याऐ युहल्लज़ीन आमनू लातख़ूनुल्लाह वर्रसूल व तख़ूनू अमानातिकुम्

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो मत चोरी करो अल्लाह की रसूल को और मत चोरी करो अमानत अपनी को।

व यम्कुरुल्लाहु वल्लाहु ख़ैरुल्माकिरीन्
(सू० ८। आ० १९। २४। २७। ३०)

और मकर करता था अल्लाह और अल्लाह भला मकर करने वालों का है।

(७६) व क़ातिलूहुम् हत्ता लातकून फ़ितनुन्
व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाह
(सू० ८ । आ० ३६)

और लड़ो उनसे यहां तक कि न रहे फितना अर्थात् बल काफिरों का और होवे दीन तमाम वास्ते अल्लाह के।

व अ़लमू इन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ
अन्न लिल्लाहि खुमुसहू व लिर्रसूलि
(सू० ८ । आ० ४१)

और जानो तुम यह कि जो कुछ तुम लूटो किसी वस्तु से निश्चय वास्ते अल्लाह के है पांचवां हिस्सा उसका और वास्ते रसूल के।

(८०) वलौतरा इज़् यतवफ़्फ़ल्लज़ीन कफ़रु
ल्मलाइकतु यज़्रिबून वुजूहहुम् व
अद्बारहुम्, वज़ूक़ू अ़ज़ाबल्हरीक़

और कभी देखे तू जब काफिरों को फरिश्ते कब्ज करते हैं मारते हैं मुख उनके और पीठें उनकी और कहते चखो अजाब जलने का।

फ़ अ़:लक्नाहुम्, बिज़ुनूबिहिम् व
अग़्रक़्ना आल फ़िर्ऑन

हमने उनके पाप से उनको मारा और हमने फिराऔन की कौम को डुबो दिया।

व अइद्दू लहुम् मस्तत्वअ़्तुम् मिन्
क़ुव्वतिन् (सू० ८ । आ० ५० । ५४ । ६०)

और तैयारी करो वास्ते उनके जो कुछ तुम कर सको।

(८१) या ऐ युहन्नबीयु हस्बुकल्लाहु व म
नित्तबअ़क मिनल् मोमिनीन्
(सू० ८ । आ० ६४)

ऐ नबी किफायत है तुझ को अल्लाह और उनको जिन्होंने मुसलमानों से तेरा पक्ष किया।

या ऐ युहन्नबीयु हर्रिज़िल् मोमिनीन
अ़लल् क़िताल, इंयकुम् मिन्कुम् इश्रून
स्वाबिरून यग़्लिबू मिअ़तैनि (आ० ६५)

ऐ नबी रगबत अर्थात चाह चस्का दे मुसलमानों को ऊपर लड़ाई के, जो हों तुम में से २० आदमी सन्तोष करने वाले तो पराजय करें दो सौ का।

फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् त्वैयि
बन् वत्तकुल्लाह, इन्नल्लाह ग़फ़ूरुर्रहीम्
(आ० ६६)

बस खाओ उस वस्तु से कि लूटा है तुमने हलाल पवित्र और डरो अल्लाह से वह क्षमा करने वाला दयालु है।

(८२) खालिदीन फ़ीहा अबदा, इन्नल्लाह
इन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम्

सदा रहेंगे बीच उसके, अल्लाह समीप उस के है, पुण्य बड़ा।

या ऐ युहल्लज़ीन आमनू ला तत्तखिज़ू
आबाअकुम् व इख़्वानकुम् औलियाअ
इनिस्तहब्बुल् कुफ़्र अ़लल् ईमान्

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो मत पकड़ो बापों अपने को और भाइयों अपने को मित्र जो दोस्त रखे कुफ्र को ऊपर ईमान के।

सुम्म अंज़लल्लाहु सकीनतहू अ़ला
रसूलिही

फिर अल्लाह ने उतारी तसल्ली अपनी ऊपर रसूल अपने के।

व अ़लल् मोमिनीन व अंज़ल जुनूदन् लम् तरौहा व अ़ज़्ज़बल्लज़ीन कफ़रू व ज़ालिक जज़ाउल् काफ़िरीन्।

सुम्म यतूबुल्लाहु मिम् बअ़दि ज़ालिक अ़ला मैं यशा।

क़ातिलुल्लज़ीन लायोमिनून बिल्लाह।

(सू० ६। आ० २२। २३। २६। २७। २६)

और ऊपर मुसलमानों के और उतारे लश्कर नहीं देखा तुमने उनको और अज़ाब किया उन लोगों को और यही सजा है काफ़िरों को।

फिर फिर आवेगा अल्लाह पीछे उसके ऊपर।

और लड़ाई करो उन लोगों से जो ईमान नहीं लाते।

(८३) व नःनु नतरब्बस्यु बिकुम् एँ युस्वीब कुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् मिन् इन्दिही व बिऐदीना। (सू० ६। आ० ५२)

और हम बाट देखने वाले हैं वास्ते तुम्हारे यह कि पहुंचावे तुम को अल्लाह अज़ाब अपने पास से वा हमारे हाथों से।

(८४) वअ़दल्लाहुल् मोमिनीन वल् मोमिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तःतिहल् अन्हारु खालिदीन फ़ीहा व मसाकिन त्वैयिबतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, व रिज़्वानुम् मिन ल्लाहि अक्बर, ज़ालिक हुवल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम्। (सू० ६। आ० ७२)

प्रतिज्ञा की है अल्लाह ने ईमान वालों से और ईमान वालियों से बहिश्तें चलती हैं नीचे उनके से नहरें सदैव रहने वाली बीच उसके और घर पवित्र बीच बहिश्तों अ़दन के और प्रसन्नता अल्लाह की ओर बड़ी है और यह कि वह है मुराद पाना बड़ा।

फ़ यस्खरून मिन्हुम्, सखिरल्लाहु मिन्हुम्। (सू० ६। आ० ७६)

बस ठट्ठा करते हैं उनसे, ठट्ठा किया अल्लाह ने उन से।

(८५) लाकिनिर्रसूल वल्लज़ीन आमनू मअ़हू जाहदू बि अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् व उलाइक लहुमुल् खैरात (आ० ८८)

परन्तु रसूल और जो लोग कि साथ उसके ईमान लाये जिहाद किया उन्होंने साथ धन अपने के तथा जान अपनी के और इन्हीं लोगों के लिये भलाई है।

व त्वबअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम ला यअ़लमून्। (सू० ६। आ० ६३)

और मोहर रक्खी अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके के, बस वे नहीं जानते।

(८६) खुज़् मिन् अम्वालिहिम् स्वदक़तन् तुत्वःहिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा।

ले माल उनके से खैरात कि पवित्र करे तू उनको अर्थात बाहरी और शुद्ध कर तू उनको साथ उसके अर्थात गुप्त में।

इन्नल्लाहश्तरा मिनल् मोमिनीन अन्फ़ुसहुम् व अम्वालहुम् बिअन्न लहुमुल्जन्नत युक़ातिलून फ़ी सबीलिल्लाहि फ़ यक़्तुलून व युक़्तलून।

(सू० ६। आ० १०३, १११)

निश्चय अल्लाह ने मोल ली है मुसलमानों से जानें उनकी और माल उनके बदले, कि वास्ते उनके बहिश्त है लड़ेंगे बीच मार्ग अल्लाह के बस मारेंगे और मर जावेंगे।

(८७) या ऐ युहल्लज़ीन आमनू क़ातिलुल्ल ज़ीन यलूनकुम् मिनल् कुफ़्फ़ारि वल् यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़ः ।

अवला यरौन अन्नहुम् युफ़्तनून फ़ी कुल्लि आमिन् मर्रतन् औ मर्रतैनि सुम्म ला यतूबून वलाहुम् यज़्ज़क्करून् । (सू० ६ । आ० १२३, १२६)

ऐ लोगो जो ईमान लाये हो लड़ो उन लोगों से कि पास तुम्हारे हैं काफ़िरों से, और चाहिये कि पावें बीच तुम्हारे दृढ़ता ।

क्या नहीं देखते यह कि वे बलाओं में डाले जाते हैं हर वर्ष के एक वा दो बार, फिर वे नहीं तोबा करते और न वे शिक्षा पकड़ते हैं ।

(८८) इन्न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़लक़स्समावाति वल् अर्ज़ फ़ी सित्तति ऐयामिन् सुम्म स्तवा अलल् अर्श, युदब्बिरुल् अम्र । (सू० १० । आ० ३)

निश्चय परवरदिगार तुम्हारा अल्लाह है जिसने पैदा किया आसमानों और पृथिवी को बीच छः दिन के फिर क़रार पकड़ा ऊपर अर्श के तदबीर करता है काम की ।

(८६) हुदौं वरह्मतुल्लिल् मोमिनीन् । (सू० ११ । आ० ५७)

शिक्षा और दया वास्ते मुसलमानों के ।

(६०) लियब्लुवकुम् ऐयुकुम् अह्सनु अमला वल इंक़ुल्त इन्नकुम् मब्ऊ़सून मिम् बअ़दिल् मौत । (सू० ११ । आ० ७)

परीक्षा लेवे तुम को, कौन तुम में से अच्छा है कर्मों में; जो कहे तू, अवश्य उठाये जाओगे तुम पीछे मृत्यु के ।

(६१) व क़ील या अर्ज़ुब्लई मा अकि व या समाउ अक़्लिई व ग़ैज़ल् माउ ।

व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़ज़रूहा ताकुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि ।(सू० ११ । आ० ४४ । ६४)

और कहा गया ऐ पृथिवी अपना पानी निगल जा और ऐ आसमान बस कर और पानी सूख गया ।

और ऐ कौम यह है निशानी ऊंटनी अल्लाह की वास्ते तुम्हारे बस छोड़ दो उसको बीच पृथिवी अल्लाह के खाती फिरे ।

(६२) ख़ालिदीन फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल् अर्ज़ ।

व अम्मल्लज़ीन सुइदू फ़फ़िल् जन्नति ख़ालिदीन फ़ीहा मादामतिस्समावातु वल् अर्ज़ । (सू० ११ । आ० १०७ । १०८)

और सदैव रहने वाले बीच उसके जब तक कि रहें आसमान और पृथिवी ।

और जो लोग सुभागी हुए बस बहिश्त के सदा रहने वाले हैं जब तक रहें आसमान और पृथिवी ।

(६३) इज् क़ाल यूसुफ़ु लिअबीहि या अबति इन्नी रऐतु (वग़ैरः)।
(सू० १२ । आ० ४ से ५७ तक)

जब यूसुफ ने अपने बाप से कहा कि ऐ बाप मेरे, मैंने एक स्वप्न में देखा (इत्यादि)।

(६४) अल्लाहुल्लज़ी रफ़अस्समावाति बिग़ैरि अमदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अलल् अर्शि।
व सख़्ख़रश्शम्स वल् क़मर।
वहुवल्लज़ी मदूदल् अर्ज़ ।
अन्ज़ल मिनस्समाइ माअन् फ़सालत् औ दियतुम् बिक़द्रिहा।
अल्लाहु यब्सुत्वुरिज़्क़ लिमैंयशाउ व यक़्दिरु।
(सू० १३ । आ० २ । ३ । १७ । २६)

अल्लाह वह है कि जिसने खड़ा किया आसमानों को बिना खम्बे के देखते हो तुम उसको फिर ठहरा ऊपर अर्श के।
आज्ञा वर्तने वाला किया सूरज और चाँद को।
और वही है जिसने बिछाया पृथिवी को।
उतारा आसमान से पानी बस बहे नाले साथ अन्दाज़ अपने के।
अल्लाह खोलता है भोजन को वास्ते जिसके चाहे और तंग करता है।

(६५) क़ुल् इन्नल्लााह युज़िल्लु मैं यशाउ व यःदी इलैहि मन् अनाब्।
(सू० १३ । आ० २७)

कह निश्चय अल्लाह गुमराह करता है जिस को चाहता है और मार्ग दिखाता है तर्फ अपनी उस मनुष्य को रुजू करता है।

(६६) व क़ज़ालिक अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अर बीयन् वलइनित्तबअत अःवाअहुम् बअद मा जाअक मिनल् इल्म्।
फ इन्नमा अलैकल् बलाग़ व अलैनल् हिसाब। (सू० १३ । आ० ३७ । ४१)

इसी प्रकार उतारा हमने इस कुरान को अर्बी जो पक्ष करेगा तू उनकी इच्छा का पीछे इसके की आई तेरे पास विद्या से।
बस सिवाय इसके नहीं कि ऊपर तेरे पैगाम पहुंचाना है और ऊपर हमारे है हिसाब लेना।

(६७) व सख़्ख़र लकुमुश्शम्स वल् क़मर दाइबीन्।
इन्नल् इंसान लज़्वलूमुन् कुफ़्फ़ार।
(सू० १४ आ० ३३ । ३४)

और किया सूर्य चन्द्र को सदैव फिरने वाले।
निश्चय आदमी अवश्य अन्याय और पाप करने वाला है।

(६८) फ इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़क़ऊलहू साजिदीन।
ल रब्बि बिमा अग़्वैतनी लउज़ैयिनन्न लहुम् फ़िल् अर्ज़ि वल उग़्वियन्नहुम् (अज्मईन्) (सू० १५ । आ० २९ । ३९)

बस ठीक करूं मैं उसको और फूंक दूं बीच उसके रूह अपनी से बस गिर पड़ो वास्ते उसके सिजदा करते हुए।
कहा ऐ रब मेरे इस कारण कि गुमराह किया तू ने मुझ को अवश्य ज़ीनत दूंगा मैं वास्ते उनके बीच पृथिवी के और गुमराह करूँगा।

(९९) वलक़द् व अस्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिन् रसूला ।

और निश्चय भेजे हमने बीच हर उम्मत के पैगम्बर ।

इज़ा अरद्नाहु अन्नकूल लहू कुन् फयकून् ।
(सू० १६ । आ० २६ आ० ४०)

जब चाहते हैं हम उसको, यह कहते हैं हम उसको हो बस हो जाती है ।

(१००) व यज्अलून लिल्लाहिल् बनाति सुब्हानहू वलहुम् मा यश्तहून् ।
(आ० ५७)

और नियत करते हैं वास्ते अल्लाह के बेटियां पवित्रता है उसको और वास्ते उनके है जो कुछ चाहें ।

तल्लाहि लक़द् अर्सल्ना ।
(सू० १६ । आ० ६३)

कसम अल्लाह की अवश्य भेजे हमने पैगम्बर ।

(१०१) उलाइकल्लज़ीन तबअल्लाहु अला कुलूबिहिम् व सम्इहिम् व अब्सारिहिम्, व उलाइक हुमुल् ग़ाफ़िलून् ।

ये लोग वे हैं कि मोहर रक्खी अल्लाह ने ऊपर दिलों उनके और कानों उनके और आंखों उनकी के और ये लोग वे हैं बे खबर ।

बतुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा अमिलत् वहुम् ला युज़्लमून् ।
(सू० १६ । १०८ । १११)

और पूरा दिया जावेगा हर जीव को जो कुछ किया है और वे अन्याय न किये जायेंगे ।

(१०२) वजअल्ना जहन्नम लिल्काफ़िरीन हसीरा ।

और किया हमने दोज़ख को वास्ते काफ़िरों के घेरने वाला स्थान ।

व कुल्ल इंसानिन् अल्ज़म्नाहु त्वाइरहू फ़ी उन्क़िही, वनुख़्रिजुलहू यौमल् क़ियामति किताबैं यल्क़ाहु मंशूरा ।

और हर आदमी को लगा दिया हमने उसको अमलनामा उसका बीच गर्दन उसकी के, और निकालेंगे हम वास्ते उसके दिन क़यामत के एक किताब कि देखेगा उसको खुला हुआ ।

वकम् अःलक्ना मिनल् कुरूनि मिम् बअदि नूहिन् ।
(सू० १७ । आ० ८ । १३ । १७)

और बहुत मारे हमने कुरनून से पीछे नूह के ।

(१०३) व आतैना समूदन्नाक़त मुब्सिरतन् ।

और दिया हमने समूद को ऊंटनी प्रमाण ।

वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्ततअत ।

और बहका जिसको बहका सके ।

यौम नद्ऊ कुल्ल उनासिम् बिइमामिहिम्, फ़मन् ऊतिय किताबहू बियमीनिही (सू० १७ । आ० ५६ । ६४ । ७१)

जिस दिन बुलावेंगे हम सब लोगों को साथ पेशवाओं उनके के बस जो कोई दिया गया अमलनामा उसका बीच दहिने हाथ उसके के ।

(१०४) उलाइक लहुम् जन्नातु अदूनिन् तज्री मिन् तःतिहिमुल् अन्हारु युह ल्लौनफ़ीहा मिन् असाविर मिन् ज़हबिन् व यल्बसून सियाबन् खुज़्वरम् मिन् सुन्दुसिन् व इस्तब्राक़िम् मुत्तकिईन फ़ीहा अलल् अराइकि, निअमस्सवाबु वहसुनत् मुर्तफ़क़न (सू० १८। आ० ३१)

ये लोग हैं वास्ते उनके हैं बाग़ हमेशह रहने के, चलती हैं नीचे उनके से नहरें, गहिना पहिनाये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने के से और पोशाक पहिनेंगे वस्त्र हरित लाही की से और ताफ़ते की से, तकिये किये हुए बीच उसके ऊपर तख़्तों के, अच्छा है पुण्य और अच्छी है बहिश्त लाभ उठाने की।

(१०५) व तिल्कल् क़ुरा अःलक्नाहुम् लम्मा ज़्वलमू, व जअल्ना लिमःलिकिहिम् मौइदन्। (सू० १८। आ० ५६)

और यह बस्तियां हैं कि मारा हमने उनको जब अन्याय किया उन्होंने, और हमने उनके मारने की प्रतिज्ञा स्थापन की।

(१०६) व अम्मल् ग़ुलामु फ़कान अबवाहु मोमिनैनि फ़ख़शीना एँयुर्हिक़हुमा त्वुग़यानम् व कुफ़्रा।

और यह जो लड़का, बस थे मा बाप उसके ईमान वाले, बस डरे हम यह कि पकड़े उनको सरकशी में और कुफ़्र में।

हत्ता इज़ा बलग़ मग़्रिबश्शम्सि वजदहा तग़्रुबु फ़ी ऐनिन् हमिअतिन्।

यहां तक कि पहुंचा जगह डूबने सूर्य की, पाया उसको डूबता था बीच चश्मे कीचड़ के।

क़ालू या ज़ल्क़र्नैनि इन्न याजूज व माजूज मुफ़्सिदून फ़िल् अर्ज़ि। (सू० १८। आ० ८०। ८६। ९४)

कहा उनने ऐज़ुलकरनैन निश्चय याजूज माजूज फ़िसाद करने वाले हैं बीच पृथिवी के।

(१०७) वज़्कुर्फ़िल् किताबि मर्यम, इज़िन्त बज़त् मिन् अःलिहा मकानन् शर्क़ीयन्, फ़त्तख़ज़त् मिन् दूनिहिम् हिजाबन् फ़ अर्सल्ना इलैहा रूहना फ़तमस्सल लहा बशरन् सवीया।

और याद करो बीच किताब के मर्यम को जब जा पड़ी लोगों अपने से मकान पूर्वी में। बस पड़ा उनसे इधर पर्दा बस भेजा हमने रूह अपनी को अर्थात फ़रिश्ता बस सूरत पकड़ी वास्ते उसके आदमी पुष्ट की।

क़ालत् इन्नी अऊज़ु बिर्रह्मानि मिन्क इन् कुन्त तक़ीयन्।

कहने लगी निश्चय मैं शरण पकड़ती हूं रहमान की तुझ से जो है तू परहेज़गार।

क़ाल इन्नमा अन रसूलु रब्बिकि, लि अहब लकि ग़ुलामन् ज़कीयन्।

कहने लगा सिवाय इसके नहीं कि मैं भेजा हुआ हूं मालिक तेरे के से तो कि दे जाऊं मैं तुझको लड़का पवित्र।

क़ालत् अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुन् व लम् यम्सस्नी बशरुन् व लम्‌अकु बग़ीया ।

कहा कैसे होगा वास्ते मेरे लड़का, नहीं हाथ लगाया मुझको आदमी ने, नहीं मैं बुरा काम करने वाली ।

फ़ हमलत्हु फ़न्तबज़त् बिही मकानन् क़स्वीया ।

बस गर्भित हो गई साथ उसके और जा पड़ी साथ उसके मकान दूर अर्थात् जंगल में ।

(सू० १६ । आ० १६ । १७ । १८ । १६ । २० । २२)

(१०८) अलम् तर अन्ना अर्सल्नश्शयात्वीन अलल् क़ाफ़िरीन तउज़्ज़ुहुम् अज़्ज़न् ।
(सू० १६ । आ० ८३)

क्या नहीं देखा तूने यह कि भेजा हमने शयतानों को ऊपर काफ़िरों के बहकाते हैं उनको बहकाने कर ।

(१०६) व इन्नी लग़फ़्फ़ारुन् लिमन् ताब व आमन व अमिल स्वालिहन् सुम्मः तदा । (सू० २० । आ० ८२)

और निश्चय क्षमा करने वाला हूं वास्ते उस मनुष्य के तोबाः की और ईमान लाया कर्म किये अच्छे फिर मार्ग पाया ।

(११०) व जअल्ना फ़िल् अर्ज़ि रवासिय अन् तमीद बिहिम् ।
(सू० २१ । आ० ३१)

और किये हमने बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा न हो कि हिल जावे ।

(१११) वल्लती अःस्वनत् फ़र्जहा फ़नफ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना । (सू० २१ । आ० ६१)

(और शिक्षा दी हमने उस औरत को) और रक्षा की उसने अपने गुह्य अङ्गों की बस फूंक दिया हमने बीच उसके रूह अपनी को ।

(११२) अलम् तर अन्नल्लाह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल् अर्ज़ि वश्शम्सु वल्क़मरू वन्नुजूमु वल् जिबालु वश्शजरु वद्दवाबु ।

क्या नहीं देखा तूने कि अल्लाह को सिजदा करते हैं जो कोई बीच आसमानों और पृथिवी के हैं सूर्य और चन्द्र तारे और पहाड़ वृक्ष और जानवर ।

युहल्लौन फ़ीहा मिन् असाविर मिन् ज़हबिन् व लूलुअन्, वलिबासुहुम् फ़ीहा हरीरुन् ।

पहिनाये जावेंगे बीच उसके कंगन सोने से और मोती और पहिनावा उनका बीच उसके रेशमी है ।

व त्वःहिर् बैतिय लित्त्वाइफ़ीन वल् क़ाइमीन ।

और पवित्र रख घर मेरे को वास्ते गिर्द फिरने वालों के और खड़े रहने वालों के ।

सुम्मल् यक़्ज़ू तफ़सहुम् वल् यूफ़ू नुज़ूर हुम् वल् यत्त्वौवफ़ू बिल् बैतिल् अतीक़ ।

फिर चाहिये कि दूर करें मैल अपने और पूरी करें भेंटें अपनी और चारों ओर फिरें घर क़दीम के ।

लियज़्कुरुस्मल्लााहि ।
(सू० २२ । आ० १८ । २३ । २६ । २६ । ३४)

तो कि नाम अल्लाह का याद करें ।

(११३) सुम्म इन्नकुम् यौमल् क़ियामति तुब्असून । (सू० २३ । आ० १६)

फिर निश्चय तुम दिन क़यामत के उठाये जाओगे ।

(११४) यौम तश्हदु अलैहिम् अल्सिनतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअमलून् ।

उस दिन कि गवाही देवेंगे ऊपर उनके जबानें उनकी और हाथ उनके और पांव उनके साथ उस वस्तु के कि थे करते ।

अल्लाहु नूरुस्समावाति वल् अर्ज़ि, मसलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन्, अल् मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन्, अज़्ज़ुजाजतु कअन्नहा कौकबुन् दुर्रीयुन् यूक़दु मिन् शजरतिन् मुबारकतिन् ज़ैतूनतिन् ला शर्क़ीयतिन् वला ग़र्बीयतिन् यकादु ज़ैतुहा युज़ीउ वलौलम् तम्सस्हु नारुन् नूरुन् अलानूरिन्, यःदिल्लाहु लिनूरिही मैं यशााउ ।
(सू० २४ । आ० २४ । ३५)

अल्लाह नूर है आसमानों का और पृथिवी का, नूर उसके कि मानिन्द ताक़ की है बीच उस के दीप हो, और दीप बीच कंदील शीशों के है, वह कंदील मानों कि तारा है चमकता, रोशन किया जाता है दीपक वृक्ष मुबारिक ज़ैतून के से, न पूर्व की ओर है न पश्चिम के समीप है, तेल उसका रोशन हो जावे जो न लगे उसको आग, रोशनी के ऊपर रोशनी, मार्ग दिखाता है अल्लाह नूर अपने की जिसको चाहता है ।

(११५) वल्लाहु खलक़ कुल्ल दाब्बतिन् मिम्माइन्, फ़ मिन्हुम् मैं यम्शी अला बत्निही ।

और अल्लाह ने उत्पन्न किया हर जानवर को पानी से बस कोई उनमें वह है कि जो चलता है पेट अपने के ।

व मैं युत्विइल्लाह वरसूलहू ।

और जो कोई आज्ञा पालन करे अल्लाह की रसूल उसके की ।

क़ुल् अत्वीउल्लाह व अत्वीउर्रसूल ।

कह आज्ञा पालन करो खुदा की व रसूल उसके की ।

व अत्वीउर्रसूल लअल्लकुम् तुर्हमून ।
(सू० ०४ । आ० ४५ । ५२ । ५४ । ५६)

और आज्ञा पालन करो रसूल की ताकि दया किये जाओ ।

(११६) व यौम तशक़्क़क़ुस्समाउ बिल्ग़मामि व नुज़्ज़िलल्मलाइकतु तंज़ीला ।

और जिस दिन कि फट जावेगा आसमान साथ बदली के, और उतारे जावेंगे फरिश्ते ।

फला तुत्विइल् काफ़िरीन व जाहिद्
हुम बिही जिहादन् कबीरा।

बस मत कहा मान काफ़िरों का और झगड़ा कर उनसे साथ झगड़ा बढ़ा।

फ़ उलाइक युबद्दिलुल्लाहु सैयिआति
हिम् हसनातिन्।

और बदल डालता है अल्लाह बुराइयों उन की को भलाइयों से।

व मन् ताब व अमिल स्वालिहन्
फ़इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा।
(सू० २५ । आ० २५ । ५२ । ७० । ७१)

और जो कोई तोबाः करे और कर्म करे अच्छे बस निश्चय आता है तरफ़ अल्लाह की।

(११७) व औहैना इला मूसा अन् अस्रि
बिइबादी इन्नकुम् मुत्तबऊन्

वही कि हमने तर्फ़ मूसा की यह कि ले चल रात को बन्दों मेरे को, निश्चय तुम पीछा किये जाओगे।

फ़ अर्सल फ़िर्औनु फ़िल् मदाइनि
हाशिरीन्।

बस भेजे लोग फ़िरोन ने बीच नगरों के जमा करने वाले।

अल्लज़ी ख़लक़नी फ़हुव यःदीनि।

और वह पुरुष कि जिसने पैदा किया मुझ को बस वही मार्ग दिखलाता है।

वल्लज़ी हुव युत्इमुनी व यस्क़ीनि।

और वह जो खिलाता है मुझको पिलाता है मुझको

वल्लज़ी अत्मउ ऐंयग़्फ़िरली ख़त्वी
अती यौमद्दीनि।
(सू० २६ । आ० ५२ । ५३ । ७८ । ७९ । ८२)

और वह पुरुष कि आशा रखता हूं मैं यह कि क्षमा करे वास्ते मेरे अपराध मेरा दिन क़यामत के।

(११८) मा अन्त इल्ला बशरुम् मिस्लुना,
फ़ाति बिआयतिन् इन् कुंत मिनस्स्वा
दिक़ीन्।

नहीं तू आदमी (परन्तु) मानन्द हमारी बस ले आ कुछ निशानी जो है तू सच्चों से।

क़ाल हाज़िही नाक़तुन् लहाशिर्बुन्।
(सू० २६ । आ० १५४ । १५५)

कहा यह ऊंटनी है वास्ते उसके पानी पीना है एक बार।

(११९) या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल् अज़ीज़ुल्
हकीमु, व अल्क़ि अस्वाक, फ़लम्मा
रआहा तःतज़्ज़ु कअन्नहा जान्नुन्,

ऐ मूसा बात यह है कि निश्चय मैं अल्लाह हूं ग़ालिब। और डाल दे असा अपना बस जब कि देखा उसको हिलता था मानो कि वह सांप है।

या मूसाला तख़फ़्, इन्नी लायख़ाफ़ु
लदैयल्मुर्सलून्।

ऐ मूसा मत डर निश्चय नहीं डरते समीप मेरे पैग़म्बर।

अल्लाहु लाइलाह इल्ला हुव रब्बुल्
अर्शिल् अज़ीम्।

अल्लाह नहीं कोई माबूद परन्तु वह मालिक अर्श बड़े का।

अल्ला तअलू अलैय वातूनी मुस्लिमीन् । (सू० २७। आ० ६। १०। २६। ३१)	यह कि मत सरकशी करो ऊपर मेरे और चले आओ मेरे पास मुसलमान होकर।
(१२०) वतरल् जिबाल तःसबुहा जामिदतन् वहिय तमुर्रु मर्रस्सहाबि, स्वुन्अल्ला हिल्लज़ी अत्क़न कुल्ल शैइन्, इन्नहू खबीरुम् बिमा तफ़्अलून् । (सू० २७। आ० ८८)	और देखेगा तू पहाड़ों को, अनुमान करता है तू उनको जमे हुए, और वे चले जाते हैं मानिन्द चलने बादलों की, कारीगरी अल्लाह की जिसने दृढ़ किया हर वस्तु को निश्चय खबरदार है उस वस्तु से कि करते हो।
(१२१) फ़ वकज़हू मूसा फ़ क़ज़ा अलैहि । (सू० २८। आ० १५)	बस मुष्ट मारा उसको मूसा ने बस पूरी की आयु उसकी।
काल् रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर्ली फ़ग़फ़रलहू, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीमु। (सू० २८। आ० १६)	कहा ऐ रब मेरे निश्चय मैंने अन्याय किया जान अपनी को बस क्षमा कर मुझको बस क्षमा कर दिया उसको निश्चय वह क्षमा करने वाला दयालु है।
व रब्बुक यख़्लुक़ु मा यशाउ व यख़्तारु (सू० २८। आ० ६८)	और मालिक तेरा उत्पन्न करता है जो कुछ चाहता है और पसन्द करता है।
(१२२) व वस्सैनल् इंसान बिवालिदैहि हुस्नन्, व इन् जाहदाक लितुश्रिकबी मा लैस लकबिही इल्मुन् फ़ला तुत्वी हुमा इलैय मर्जिउकुम् । (सू० २९। आ० ८)	और आज्ञा दी हमने मनुष्य को साथ मा बाप के भलाई करना और जो झगड़ा करें तुझसे दोनों, यह कि शरीक लावे तू साथ मेरे उस वस्तु को, कि नहीं वास्ते तेरे साथ उसके ज्ञान, बस मत कहा मान उन दोनों का तर्फ मेरी है।
व लक़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़ लबिस फ़ीहिम् अल्फ़ सनतिन् इल्ला खम्सीन आमन् । (सू० २९। आ० १४)	और अवश्य भेजा हमने नूह को तर्फ कौम उसके कि बस रहा बीच उनके हजार वर्ष परन्तु पचास वर्ष कम।
(१२३) अल्लाहु यब्दउल्खल्क़ सुम्म युईदुहू सुम्म इलैहि तुर्जऊन् ।	अल्लाह पहिली बार करता है उत्पत्ति, फिर दूसरी बार करेगा उसको, फिर उसी की ओर फेरे जाओगे।
व यौम तक़ूमुस्साअतु युब्लिसुल् मुज्रिमून् ।	और जिस दिन वर्पा अर्थात् खड़ी होगी क़यामत निराश होंगे पापी।

फ़अम्मल्लज़ीन आमनू व अमिलुस्स्वालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़्ज़तिन् युःबरून वलइन् अर्सल्ना रीहन् फ़रऔहु मुस्फ़र्रन् (लज़्ज़ल्लू मिम्बअ्दिही यक्फ़ुरून्)।

बस जो लोग कि ईमान लाये और काम किये अच्छे बस वे बीच बाग के सिंगार किये जावेंगे।

और जो भेज दें हम एक बाव बस देखें उस खेती को पीली हुई।

कज़ालिक यत्वबउल्लाहु अला क़ुलूबिल्लज़ीन ला यअ्लमून्।

इसी प्रकार मोहर रखता है अल्लाह ऊपर दिलों उन लोगों के कि नहीं जानते।

(सू० ३० । आ० ११ । १२ । १५ । ५१ । ५९)

(१२४) तिल्क आयातुल्किताबिल् हकीम्। ख़लक़स्समावाति बिग़ैरि अमदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल् अर्ज़ि रवासिय अन्तमीद बिकुम्।

ये आयतें हैं किताब हिक्मत वाले की। उत्पन्न किया आसमानों को बिना सुतून अर्थात् खम्भे के देखते हो तुम उसको और डाले बीच पृथिवी के पहाड़ ऐसा न हो कि हिल जावे।

(सू० ३१ । आ० २ । १०)

अलम् तर अन्नल्लाह यूलिजुल्लैल फ़िन्नहारि वयूलिजुन्नहार फ़िल्लैलि।

क्या नहीं देखा तूने यह कि अल्लाह प्रवेश कराता है रात को बीच दिन के और प्रवेश कराता है दिन को बीच रात के।

अलम् तर अन्नल् फ़ुल्क तज्री फ़िल् बःरि बिनिअ्मतिल्लाहि लियुरीकुम् मिन् आयातिही।

क्या नहीं देखा कि किश्तियाँ चलती हैं बीच दर्या के साथ निआमतों अल्लाह के तो कि दिखलावें तुमको निशानियाँ अपनी।

(सू० ३१ । आ० २९ । ३१)

(१२५) युदब्बिरुल् अम्र मिनस्समाइ इलल् अर्ज़ि सुम्म यअ्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् कान मिक़्दारुहू अल्फ़ सनतिम् मिम्मा तउद्दून्।

तदबीर करता है काम की आसमान से तर्फ पृथिवी की फिर चढ़ जाता है तर्फ उसकी बीच एक दिन के कि है अवधि उसकी सहस्र वर्ष उन वर्षों से कि गिनते हो तुम।

ज़ालिक आलिमुल्ग़ैबि वश्शहादतिल् अज़ीज़ुर्रहीम्।

यह है जानने वाला ग़ैब का और प्रत्यक्ष का ग़ालिब दयालु।

सुम्म सव्वाहु वनफ़ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही

फिर पुष्ट किया उसको और फूंका बीच उस के रूह अपनी से।

क़ुल् यतवफ़्फ़ाकुम् मलकुल् मौतिल्लज़ी वुक्किल बिकुम्।

कह क़ब्ज करेगा तुमको फरिश्ता मौत का वह जो नियत किया गया है साथ तुम्हारे।

वलौशेना ल आतैना कुल्ल नफ़्सिन् हुदाहा वलाकिन् हक्क़ल्क़ौलु मिन्नी ल अम्लअन्न जहन्नम मिनल् जिन्नति वन्नासि अज्मईन्।

(सू० ३२। आ० ४। ५। ६। ११। १३)

और जो चाहते हम अवश्य देते हम हर एक जीव को शिक्षा उसकी परन्तु सिद्ध हुई बात मेरी ओर से कि अवश्य भरूँगा मैं दोजख को जिनों से और आदमियों से इकट्ठे।

(१२६) कुल् लैंयन्फ़अकुमुल् फ़िरारु इन् फ़र्रतुम् मिनल्मौति अविल् क़त्लि।

कह कि कभी न लाभ देगा भागना तुमको जो भागो तुम मृत्यु व क़तल से।

या निसाअन्नबीयि मैं याति मिन्कुन्न बिफ़ाहिशतिन् मुबैयिनतिन् युज़्आफ़् लहल् अज़ाबु ज्वेअ्फ़ैनि, व कान ज़ालिक अलल्लाहि यसीरा।

(सू० ३३। आ० १६। ३०)

ऐ बीबियों नबी की जो कोई आवे तुम में से साथ निर्लज्जता प्रत्यक्ष के दुगना किया जावेगा वास्ते उसके आज़ाब और है यह ऊपर अल्लाह के सहल।

(१२७) वक़र्न फ़िबुयूतिकुन्न, व अत्वेअन ल्लाह व रसूलहू।

और अटकी रहो बीच घरों अपने के आज्ञा पालन करो अल्लाह और रसूल की (सिवाय इसके नहीं)।

फ़लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्मिन्हा व त्वर्रन् जव्वज् ना कहा लिकैला यकून अलल्मोमिनीन हरजुन् फ़ी अज़्वाजि अदूइयाइहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्न व त्वर्रन्, वकान अम्रुल्लाहि मफ़्ऊलन्।

बस जब अदा कर ली ज़ैद ने हाजत उससे, ब्याह दिया हमने तुझ से उसको ताकि न होवे ऊपर ईमान वालों के तंगी बीच बीबियों ले पालकों उनके के, जब अदा कर लें उनसे हाजत और है आज्ञा खुदा की की गई।

माकान अलन्नबीयि मिन् हरजिन् फ़ीमा फ़रज़्वल्लाहु लहू।

नहीं है ऊपर नबी के कुछ तंगी बीच उस वस्तु के।

माकान मुहम्मदुन् अबा अहदिम् मिर्रिजालिकुम्।

नहीं है मुहम्मद बाप किसी मर्दों का।

वम्रअतम् मोमिनतन् इंव्वहबत् नफ़्सहा लिन्नबीये।

और हलाल की स्त्री ईमान वाली जो देवे बिना महर के जान अपनी वास्ते नबी के।

तुर्जी मन्तशाउ मिन्हुन्न व तोवी इलैक मन् तशाउ, फ़ला जुनाह अलैक।

ढील देवे तू जिसको चाहें उनमें से और जगह देवे तर्फ़ अपनी जिसको चाहे, नहीं पाप ऊपर तेरे।

या ऐ युहल्लज़ीन आमनू लातद्ख़ुलू बुयूतन् नबीये ।

व माकान लकुम् अन्तोज़ू रसूलल्लाहि वला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बा अदिही अबदन् ।

(सू० ३३ । आ० ३३।३७।३८।४०।५०।५१।५३)

ऐ लोगों जो ईमान लाये हो मत प्रवेश करो घरों में पैगम्बर के ।

नहीं योग्य वास्ते तुम्हारे यह कि दुःख दो रसूल को, यह कि निकाह करो बीबियों उसकी को पीछे उसके कभी ।

(१२८) इन्नज़ालिकुम् कान इन्दल्लाहि अज़ीमा ।

इन्नल्लज़ीन योज़ूनल्लाह व रसूलहू लअनहुल्लाहु ।

वल्लज़ी योज़ूनल् मोमिनीन वल् मोमिनाति बिग़ैरि मक्तसबू फ़क़दिःतमलू बुःतानन् व इस्मम्मुबीना ।

मल्ऊनीन, ऐनम सुक़िफ़ू उखिज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीलन् ।

रब्बना आतिहिम् ज़्वेअफ़ैनि मिनल् अज़ाबि वल् अन्हुम् लअनन् कबीरा ।

(सू० ३३ । आ० ५३ । ५७ । ५८ । ६१ । ६८)

निश्चय यह है समीप अल्लाह के बड़ा पाप ।

निश्चय जो लोग कि दुःख देते हैं अल्लाह को और रसूल उसके को, लानत की है उनको अल्लाह ने ।

और वे लोग कि दुःख देते हैं मुसलमानों को और मुसलमान औरतों को बिना इसके बुरा किया है उन्होने, बस निश्चय उठाया उन्होंने बोहतान अर्थात् झूठ और प्रत्यक्ष पाप ।

लानत मारे, जहां पाये जायें पकड़े जावें कतल किये जावें खूब मारा जाना ।

ऐ रब हमारे दे उनको द्विगुण अजाब से, और लानत से बड़ी लानत कर ।

(१२९) वल्लाहुल्लज़ी अर्सलर्रियाह फ़तुसीरु सहाबन् फ़सुक़्नाहु इला बलदिम् मैयितिन् फ़ अहयैना बिहिल् अर्ज़ बअ्द मौतिहा, कज़ालिकन्नुशूरु ।

अल्लज़ी अहल्लना दारल्मुक़ामति मिन् फ़ज़्वलिही, ला यमस्सुना फ़ीहा नस्बुन् वला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूबुन्

(सू० ३५ । आ० ९ । ३५)

और अल्लाह वह पुरुष है कि भेजता है हवाओं को बस उठाती हैं बादलों को बस हांक लेते हैं तर्फ शहर मुर्दे की, बस जीवित किया हमने साथ उसके पृथिवी को पीछे मृत्यु उसकी के, इसी प्रकार कबरों में से निकलना है ।

जिसने उतारा बीच घर सदा रहने के दया अपनी से, नहीं लगती हम को बीच उसके महनत और नहीं लगती बीच उसके मांदगी ।

(१३०) वल् क़ुर्आनिल्हकीम, इन्नक लमिनल् मुर्सलीन् ।

कसम है कुरान दृढ़ की निश्चय तू भेजे हुओं से है ।

अला सिराति‌म्मुस्तक़ीम, तंज़ीलल् अज़ीज़िर्रहीम् । (सू० ३६ । आ० २ । ३ । ४ । ५)

ऊपर मार्ग सीधे के उतारा है गालिब दयावान ने।

(१३१) वनुफ़िख़ फ़िस्सूरि फ़इज़ाहुम् मिनल् अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून ।

और फूंका जावेगा बीच सूर के बस नागहां वह कबरों में से तर्फ मालिक अपने की दौड़ेंगे।

व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून ।

और गवाही देंगे पांव उनके साथ उस वस्तु के कि थे कमाते।

इन्नमा अम्रुहू इज़ा अराद शैअन् ऐं यकूल लहू कुन् फयकूनु । (सू० ३६ । आ० ५१ । ६५ । ८२)

सिवाय इसके नहीं कि आज्ञा उसकी जब चाहे उत्पन्न करना किसी वस्तु का यह कि कहता है वास्ते उसके कि हो जा बस हो जाती है।

(१३२) युत्वाफु अलैहिम् बिकासिम् मिम्मइनिन् बैज़ाअ लज़्ज़ातिल्लिश्शारिबीन । (आ० ४५)

फिराया जावेगा उसके ऊपर पियाला शराब शुद्ध का।

सपैद मजा देने वाली वास्ते पीने वालों के।

व इंदहुम् क़ास्िरातुत्त्वर्फ़ि ईनुन् ।

समीप उनके बैठी होंगी नीचे आंख रखने वालियां सुन्दर आंख वालियां।

क अन्न हुन्न बैज़ुम् मक्नूनुन् । (आ० ४८ । ४६)

मानो किये अण्डे हैं छिपाये हुए।

अफ़मा नःनु बिमैयितीन ।

क्या बस हम नहीं मरेंगे।

व इन्न लूत्वल् लामिनल् मुर्सलीन ।

और अवश्य लूत निश्चय पैगम्बरों से था।

इज़् नज्जैनाहु व अःलहू अज्मईन ।

जब कि मुक्ति दी हमने उसको और लोगों उसके को सब को।

इल्ला अजूज़न् फ़िल् ग़ाबिरीन ।

परन्तु एक बुढ़िया पीछे रहने वालों में है।

सुम्म दम्मर्नल् आख़िरीन ।

फिर मारा हमने औरों को।

(सू० ३७ । आ० ४५ । ४८ । ४६ । ५८ । १३३ । १३४ । १३५ । १३६)

(१३३) जन्नाति अद्निम् मुफ़त्तहतन् लहुमुल् अब्वाबु ।

बहिश्ते हैं सदा रहने की खुले हुए हैं दर उन के वास्ते उनके।

मुत्तकिईन फ़ीहा यद्ऊन फ़ीहा बिफ़ाकिहतिन् क़सीरतिन् व शराब ।

तकिये किये हुए बीच उनके मंगावेंगे बीच इसके मेवे और पीने की वस्तु।

व इन्द हुम् क़ास्विरातुत्त्तर्फ़ि अत्राबुन्।	और समीप होंगी उनके नीचे रखने वालियाँ दृष्टि, और दूसरों से समायु।
फ़सजदल् मलाइकतु कुल्लुहुम् अज्मऊन्।	बस सिजदा किया फरिश्तों ने सब ने।
इल्ला इब्लीस, इस्तक्बर व कान मिनल् काफ़िरीन।	परन्तु शयतान ने न माना अभिमान किया और था काफिरों से।
या इब्लीसु मा मनअक अन् तस्जुद लिमा खलक़्तु बियदैय, अस्त कबर्त अम् कुन्त मिनल् आलीन।	ऐ शयतान किस वस्तु ने रोका तुझ को यह कि सिजदा करे वास्ते उस वस्तु के कि बनाया मैंने साथ दोनों हाथ अपने के, क्या अभिमान किया तूने, वा था बड़े अधिकार वालों से।
क़ाल अन खैरुम्मिन्हु, खलक़्तनी मिन् नारिन् व खलक़्तहू मिन त्तीन्।	कहा कि मैं अच्छा हूं उस वस्तु से, उत्पन्न किया तूने मुझको आग से, उसको मिट्टी से।
क़ाल फ़ख्रुज् मिन्हा फ़ इन्नक रजीम्।	कहा बस निकल इन आसमानों में से बस निश्चय तू चलाया गया है।
इन्न अलैक लअ्नती इला यौमिद्दीन्।	निश्चय ऊपर तेरे लानत है मेरी दिन जज़ा तक।
क़ाल रब्बि फ़ अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्असून।	कहा ऐ मालिक मेरे ढील दे उस दिन तक कि उठाये जावेंगे मुर्दे।
क़ाल फ़ इन्नक मिनल् मुन्ज़रीन्।	कहा कि बस निश्चय तू ढील दिये गयों से है।
इला यौमिल् वक़्तिल् माअ्लूम्।	उस दिन समय ज्ञात तक।
क़ाल फ़बिइज़्ज़तिक लउग़्वियन्नहुम् अज्मइन्।	कहा कि बस कसम है प्रतिष्ठा तेरी की, कि अवश्य गुमराह करूँगा उनको मैं इकट्ठे।

(सू० । ३८ । आ० ५० । ५१ । ५२ । ७३ । ७४ । ७५ । ७६ । ७७ । ७८ । ७९ । ८० । ८१ । ८२)

(१३४) इन्नल्लाह यग़्फ़िरुज़्ज़ुनूब जमीआ, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम्।	अल्लाह क्षमा करता है पाप सारे निश्चय वह है क्षमा करने वाला दयालु।
वल् अर्ज़ु जमीअन् क़ब्ज़तुहू यौमल् क़ियामति वस्समावातु मत्वीयातुन् बियमीनिही।	और पृथिवी सारी मूंठी में है उसकी दिन कयामत के, और आसमान लपेटे हुए हैं बीच दाहने हाथ उसके।

व अश्रक़तिल् अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व युज़िअल्किताबु वजिआइअ बिन्नबीयीन वश्शुहदाए वक़ुज़िय (बैनहुम् बिल्हक़्क़ि)

(सू० ३९ । आ० ५३ । ६७ । ६९)

और चमक जावेगी पृथिवी साथ प्रकाश मालिक अपने के, और रक्खे जावेंगे कर्मपत्र और लाया जावेगा पैगम्बरों को और गवाहों को और फ़ैसला किया जावेगा।

(१३५) तंज़ीलुल्किताबि मिनल्लाहिल् अज़ीज़िल् अलीम्।

उतारना किताब का अल्लाह ग़ालिब जानने वाले की ओर से है।

ग़ाफ़िरिज़्ज़म्बि व क़ाबिलत्तौबि।

(सू० ४० । आ० २ । ३)

क्षमा करने वाला पापों का और स्वीकार करने वाला तोबाः का।

(१३६) फ़ क़ज़ाहुन्न सब्अ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समाइन् अम्रहा।

बस नियत किया उसको सात आसमान बीच दो दिन के और डाल दिया हमने बीचे उसके काम उसका।

हत्ता इज़ा मा जाऊहा शहिद अलैहिम् समउहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअमलून्।

यहाँ तक कि जब जावेंगे उसके पास साक्षी देंगे ऊपर उनके कान उनके और आंखें उनकी और चमड़े उनके, उनके कर्म से।

व क़ालू लिजुलूदिहिम् लिम शहिदुत्तुम् अलैना क़ालू अन्तक़नल्लाहुल्लज़ी अन्तक़ कुल्ल शैअन्।

और कहेंगे वास्ते चमड़े अपने के क्यों साक्षी दी तू ने ऊपर हमारे, कहेंगे कि बुलाया है हमको अल्लाह ने जिसने बुलाया हर वस्तु को।

(इन्नल्लज़ी अह्याहा) लमुह्यिल्मौता।

(सू० ४१ । आ० १२ । २० । २१ । ३९)

अवश्य जिलाने वाला है मुर्दों को।

(१३७) मक़ालीदुस्समावाति वल् अर्ज़ि, यब्सुतुर्रिज़्क़ लिमैं यशाउ व यक़्दिरु।

वास्ते इसके कुंजियां हैं आसमानों की और पृथिवी की खोलता है भोजन जिसके वास्ते चाहता है और तंग करता है।

यख़्लुक़ु मा यशाउ, यहबु लिमैंयशाउ इनासम् व यहबु लिमैं यशाउज़्ज़ुकूर।

उत्पन्न करता है जो कुछ चाहता है और देता है जिसको चाहे बेटियां और देता है जिस को चाहे बेटे।

औ युज़ौविजुहुम् ज़ुक्रानन् व इनासन् व यज्अलु मैंयशाउ अक़ीमा।

वा मिला देता है उनको बेटे और बेटियां और कर देता है जिसको चाहे बाँझ।

वमा कान लिबशरिन् ऐंयुकल्लिम हुल्लाहु इल्ला वह्यन् औ मिंव्वराइ हजाबिन् औ युर्सिल रसूलन् ।
(सू० ४१ । आ० १२ । ४६ । ५० । ५१)

और नहीं है शक्ति किसी आदमी को कि बात करे उससे अल्लाह परन्तु जी में डालने कर वा पीछे पर्दे के से, वा भेजे फरिश्ता पैग़ाम लाने वाला ।

(१३८) वलम्मा जाअ ईसा बिल्बैयिनाति ।
(सू० ४३ । आ० ६३)

और जब आया ईसा साथ प्रमाण प्रत्यक्ष के ।

(१३९) खुज़ूहु फ़अतिलूहु इलासवाइल् जहीम् ।

पकड़ो उसको बस घसीटो उसको बीचों बीच दोज़ख़ के ।

कज़ालिक, वज़व्वजनाहुम् बिहूरिन् ईन् । (सू० ४४ । आ० ४७ । ५४)

इसी प्रकार रहेंगे और ब्याह देंगे उनको साथ गोरियों अच्छी आंख वालियों के ।

(१४०) फ़ इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ीन कफ़रू फ़ ज़र्बर्रिक़ाबि, हत्ता इज़ा अस्खन्तुमूहुम् फ़शुद्दु वल्वसाक़ ।

बस जब तुम मिलो उन लोगों से कि काफिर हुए बस मारो गर्दन उनकी यहाँ तक कि जब चूर कर दो उनको बस दृढ़ करो कैद करना ।

वक ऐयिम्मिन् क़र्यतिन् हिय अशद्दु कुव्वतन् मिन् क़र्यतिकल्लती अख़रजत्क अःलकनाहुम् फ़ला नास्विरलहुम् ।

और बहुत बस्तियां हैं कि वे बहुत कठिन थीं शक्ति में बस्ती तेरी से, जिससे निकाल दिया तुझको मारा हमने उसको बस न हुआ कोई सहाय देने वाला उनका ।

मसलुल् जन्नतिल्लती वुइदल्मुत्तक़ून, फ़ीहा अन्हारुम्मिम्माइन् ग़ैरि आसिन् व अन्हारुम्मिल्लबनिल् लम् यतग़ैयर् त्वाअमुहू, व अन्हारुम्मिन् ख़मरिल्लज़्ज़तिल् लिश्शारिबीन, व अन्हारुम्मिन् असलिम् मुसफ़्फ़ा, व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्समराति व मग़्फ़िरतुम् मिर्रब्बिहिम् ।

तारीफ उस बहिश्त की कि प्रतिज्ञा किये गये हैं परहेजगार, बीच उसके नहरें हैं बिन बिगड़े पानी की, और नहरें हैं दूध की, कि नहीं बदला मज़ा उनका, और नहरें हैं शराब की मज़ा देने वाली वास्ते पीने वालों के, और नहरें शहद साफ किये गये की, और वास्ते उनके बीच उसके मेवे हैं, प्रत्येक प्रकार से दान मालिक उनके से ।

(१४१) इज़ा रुजजतिल् अर्ज़ु रज्जन् ।

जब कि हिलाई जावेगी पृथिवी हिलाये जाने कर ।

व बुस्सतिल्जिबालु बस्सन् ।

और उड़ाए जावेंगे पहाड़ उड़ाने जाने कर ।

फ़कानत् हबाअन् मुम्बस्सन् ।

बस हो जावेंगे भुनुगे टुकड़े टुकड़े ।

फ़ अस्हाबुल् मैमनति, मा अस्हाबुल् मैमनति ।

बस साहब दाहिनी ओर वाले क्या हैं साहब दाहनी ओर के ।

व अस्हाबुल् मश्अमति, मा अस्हाबुल् मश्अमति ।

और बाईं ओर वाले क्या हैं बाईं ओर के।

अला सुरुरिम् मौज़्वूनतिन् ।

ऊपर पलंग सोने के तारों से बुने हुए हैं।

मुत्तकिईन अलैहा मुतक़ाबिलीन ।

तकिये किये हुए हैं ऊपर उनके आमने सामने।

यत्वूफ़ अलैहिम् विल्दानुम् मुखल्लदून ।

और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने वाले।

बिअक्वाबिन् व अबारिक़ ।

साथ आबखोरों के और आफ़ताबों के।

व कासिम् मिम् मईनिन् ।

और प्यालों के शराब साफ से।

ला युस्वद्दऊन अन्हा वला युंज़िफ़ून।

नहीं माथा दुखाये जावेंगे उससे और न विरुद्ध बोलेंगे।

व फ़ाकिहतिम् मिम्मा यतखैयरून ।

और मेवे उस क़िस्म से कि पसन्द करें।

व लह्मि त्वैरिम् मिम्मा यश्तहून ।

और गोश्त जानवर पक्षियों के उस क़िस्म से कि पसन्द करें।

व हूरुन् ईनुन्, कअम्सालिल् लूलुइल् मक्नून् ।

और वास्ते उनके औरतें हैं अच्छी आंखों वाली। मानन्द मोतियों छिपाये हुओं की।

व फ़रुशिम्मर्फ़अतिन् ।

और बिछौने बड़े।

इन्ना अन्शानाहुन्न इंशाअन् ।

निश्चय हमने उत्पन्न किया है औरतों को एक प्रकार का उत्पन्न करना।

फ़जअल्ना हुन्न अब्कारन् ।

बस किया है हमने उनको कुमारी।

उरुबन् अत्राबा ।

सुहाग वालियां बराबर अवस्था वालियां।

फ़मालिऊन मिन्हल् बुत्वून ।

बस भरने वाले हो उससे पेटों को।

फ़ला उक़्सिमु बिमवाक़िइन्नुजूम् ।

बस क़सम खाता हूं मैं साथ गिरने तारों के।

(सू० ५६ । आ० ४ । ५ । ६ । ८ । ६ । १५ से २३ । ३४ से ३७ । ५३ । ७५)

(१४२) इन्नल्लाह युहिब्बुल्लज़ीन युक़ातिलून फ़ी सबीलिही । (सू० ६१ । आ० ४)

निश्चय अल्लाह मित्र रखता है उन लोगों को कि लड़ते हैं बीच मार्ग उसके।

(१४३) या ऐ युहन्नबीयु लिम तुहर्रिमु मा अहल्लल्लाहु लक, तब्तग़ी मज़्रात अज़्वाजिक, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम् ।

ऐ नबी क्यों हराम करता है उस वस्तु को कि हलाल किया है खुदा ने तेरे लिये, चाहता है तू प्रसन्नता बीबियों अपनी की और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है।

असा रब्बुहू इन् त्वल्लक़कुन्न ऐं युब्दिलहू अज़्वाजन् खैरम् मिन्कुन्न मुस्लिमातिन् मोमिनातिन् क़ानितातिन् ताइबातिन् आबिदातिन् साइहातिन् सैयिबातिन् व अब्कारन् । (सू० ६६ । आ० १।५)

जल्दी है मालिक उसका जो वह तुमको छोड़ दे तो, यह कि उसको तुम से अच्छी मुसलमान और ईमान वालियाँ बीबियाँ बदल दे सेवा करने वालियाँ तोबा करने वालियां भक्ति करने वालियाँ रोजा रखने वालियां पुरुष देखी हुई और बिन देखी हुई।

(१४४) या ऐ युहन्नबीयु जाहिदिल्कुफ़्फ़ार वल् मुनाफ़िक़ीन वग़्लुज़् अलैहिम् ।
(सू० ६६ । आ० ६)

ऐ नबी झगड़ा कर काफ़िरों और गुप्त शत्रुओं से और सख़्ती कर ऊपर उनके ।

(१४५) वन्शक़्क़तिस्समाउ फ़हिय यौमइज़िन् वाहियतुन् ।

फट जावेगा आसमान बस वह उस दिन सुस्त होगा ।

वल् मलकु अला अर्जाइहा, व यःमिलु अर्श रब्बिक फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियतुन् ।

और फ़रिश्ते होंगे ऊपर किनारों उसके के और उठावेंगे तख़्त मालिक तेरे का ऊपर अपने, उस दिन आठ जन ।

यौम इज़िन् तोअरज़ून ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़ियतुन् ।

उस दिन सामने लाये जाओगे तुम न छिपी रहेगी कोई बात छिपी हुई ।

फ़ अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बियमीनिही फ़ यक़ूलु हााउमुक़्ऊ किताबियः ।

बस जो कोई दिया गया कर्म पत्र अपना बीच दाहिने हाथ अपने के बस कहेगा लो पढ़ो कर्म पत्र मेरा ।

व अम्मा मन् ऊतिय किताबहू बिशिमालिही फ़यक़ूलु यालैतनी लम् ऊत किताबियः ।
(सू० ६९ । आ० १६ । १७ । १८ । १९ । २५)

और जो कोई दिया गया कर्मपत्र बीच बांयें हाथ अपने के बस कहेगा हाय न दिया गया होता मैं कर्मपत्र अपना ।

(१४६) तअरुजुल् मलाइकतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् कान मिक़्दारुहू ख़म्सीन अल्फ़ सनतिन् ।

चढ़ते हैं फ़रिश्ते और रूह तर्फ़ उसकी वह अज़ाब होगा बीच उस दिन के कि है परिमाण उसका पचास हज़ार वर्ष ।

यौम यख़्रुजून मिनल् अज्दासि सिराअन् कअन्नहुम् इला नुस्बुबिन् यूफ़िज़ून । (सू० ७० । आ० ४ । ४३)

जब कि निकलेंगे कबरों में से दौड़ते हुए मानो कि वह बुतों के स्थानों की ओर दौड़ते हैं ।

(१४७) क़द् ख़लक़हुम् अत्वारन् ।

निश्चय उत्पन्न किया तुमको कई प्रकार से ।

अलम् तरौ कैफ़ ख़लक़ल्लाहु सब्अ समावातिन् त्बिाक़न् ।

क्या नहीं देखा तुमने कैसे उत्पन्न किया अल्लाह ने सात आसमानों को ऊपर तले ।

व जअलल् क़मर फ़ीहिन्न नूरन् व जअलश्शम्स सिराजा ।
(सू० ७१ । आ० १४ । १५ । १६)

और किया चाँद को बीच उसके प्रकाशक और किया सूर्य को दीपक ।

(१४८) अन्नल् मसाजिद लिल्लाहि फ़ला तद्ऊ मअ्ल्लाहि अःदा ।
(सू० ७२ । आ० १८)

यह भी मसजिदें वास्ते अल्लाह के हैं बस मत पुकारो साथ अल्लाह के किसी को ।

(१४९) व जुमिअ्शश्म्सु वल् क़मरु ।
(सू० ७५ । आ० ६)

इकट्ठा किया जावेगा सूर्य और चांद ।

(१५०) व यत्वूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्मुख़ल्लदून, इज़ा रएेतहुम् हसिब्तहुम् लूलुअम्मंसूरा ।

और फिरेंगे ऊपर उनके लड़के सदा रहने वाले जब देखेगा तू उनको, अनुमान करेगा तू उनको मोती बिखरे हुए ।

व हुल्लू असाविर मिन् फ़िज़्ज़्वः, वसक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् त्वहूरा ।
(सू० ७६ । आ० १६ । २१)

और पहनाये जावेंगे कंगन चाँदी के और पिलावेगा उनको रब उनका शराब पवित्र ।

(१५१) जज़ाअन् विफ़ाक़न् ।

बदला दिये जावेंगे कर्म्मानुसार ।

व कासन् दिहाक़ा ।

और प्याले हैं भरे हुए ।

यौम यक़ूमुर्रूहु वल् मलाइकतु सफ़्फ़न् ।
(सू० ७८ । आ० २६ । ३४ । ३८)

जिस दिन खड़े होंगे रूह और फरिश्ते सफ़ बांध कर ।

(१५२) इज़श्शम्सु कूविरत् ।

जब कि सूर्य लपेटा जावे ।

व इज़न्नुजूमुन् कदरत् ।

और जब कि तारे गदले हो जावें ।

व इज़ल्जिबालु सुइयिरत् ।

और जब कि पहाड़ चलाये जावें ।

व इज़स्समाउ कुशित्वत् ।
(सू० ८१ । आ० १ । २ । ३ । ११)

और जब आसमान की खाल उतारी जावे ।

(१५३) इज़स्समाउन् फ़त्वरत् ।

और जब कि आसमान फट जावे ।

व इज़ल्कवाकिबुन्तसरत् ।

और जब तारे झड़ जावें ।

व इज़ल्बिहारु फ़ुज्जिरत् ।

और जब दर्या चीरे जावें ।

व इज़ल्क़ुबूरु बुअ्सिरत् ।
(सू० ८२ । आ० १ । २ । ३ । ४)

और जब कबरें जिला कर उठाई जावें ।

(१५४) वस्समाइ ज़ातिल्बुरूजि ।

क़सम है आसमान बुर्जों वाले की ।

बल् हुव क़ुर्आनुम्मजीदुन् फ़ी लौहिम् मःफ़ूज़िन् । (सू० ८५ । आ० १ । २१)

किन्तु वह क़ुरान है बड़ा बीच लौह महफ़ूज़ (सुरक्षित तख़्ती) के ।

(१५५) इन्नहुम् यकीदून कीदन् ।	निश्चय वे मकर करते हैं एक मकर।
व अकीदु कीदन् ।	और मै भी मकर करता हूं एक मकर।
(सू० ८६ । आ० १५ । १६)	
(१५६) व जाअ रब्बुक वल् मलकु स्वफ़्फ़न् स्वफ़्फ़न् ।	और जब आवेगा मालिक तेरा और फरिश्ते पंक्ति बाँध के।
व जाइय यौमइज़िम् बिजहन्नम ।	और लाया जावेगा उस दिन दोजख़ को।
(सू० ८६ । आ० २२ । २३)	
(१५७) फ़क़ाल लहुम् रसूलुल्लाहि नाक़तल्लाहि व सुक़्याहा ।	बस कहा था वास्ते उनके पैगम्बर खुदा के ने, रक्षा करो ऊंटनी खुदा की को, और पानी पिलाना उसको।
फ़ कज़्ज़बूहु फ़अक़रूहा, फ़ दम्दम अलैहिम् रब्बुहुम् ।	बस झुठलाया उसको बस पाँव काटे उसके बस मरी डाली ऊपर उनके रब उनके ने।
(सू० ६१ । आ० १३ । १४)	
(१५८) कल्ला लइल्लम् यन्तहि, लनस्फ़अम् बिन्नास्वियति ।	यों जो न रुकेगा अवश्य घसीटेंगे उसको हम साथ बालों माथे के।
नास्वियतिन् काजिबतिन् ख़ात्विअतिन् ।	वह माथा कि झूंठा है और अपराधी।
सनद्उज़्ज़बानियत ।	हम बुलावेंगे फ़रिश्ते दोजख़ के को।
(सू० ६६ । आ० १५ । १६ । १८)	
(१५६) इन्ना अंजल्नाहु फ़ीलैलतिल् क़द्रि ।	निश्चय उतारा हमने क़ुरान को बीच रात क़दर के
वमा अद्राक मा लैलतुल्क़द्रि ।	और क्या जाने तू क्या है रात क़दर की।
तनज़्ज़लुल्मलाइकतु वर्रूहु फ़ीहा बिइज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन्।	उतरते हैं फरिश्ते और पवित्रात्मा बीच उसके, साथ आज्ञा मालिक अपने की, वास्ते हर काम के।
(सू० ६७ । आ० १ । २ । ४)	